

काशी प्रतिबिम्ब



काशी तमिल संगमम्
काशी तमिल संगमम्

अंक-27

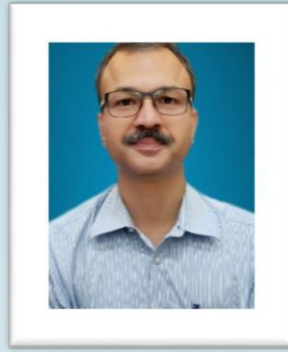


जून-2023



पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संरक्षक की कलम से



पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी की पत्रिका 'काशी प्रतिबिंब' के 27वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुपालन में तथा राजभाषा हिंदी के विकास व प्रसार हेतु हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा नीति के संवैधानिक क्रियान्वयन का एक अनिवार्य अंग है।

वाराणसी मंडल भारत सरकार द्वारा निर्देशित राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति और हिंदी भाषा के विकास को गति प्रदान करने के उद्देश्य से पत्रिका 'काशी प्रतिबिंब' का नियमित प्रकाशन करता आ रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे मंडल में ज्ञान, सूचना-प्रसारण व कला के सृजनात्मक वातावरण का निर्माण होगा।

भारतीय रेल प्रतिभाशाली व कर्मठ व्यक्तियों से भरा हुआ है। व्यक्ति-मन के पास सृजन करने की अद्भुत क्षमता है। उसके पास कल्पनाशक्ति है। वह अपनी कल्पना से नए विचारों को जन्म दे सकता है। वह एक नई अलौकिक सृष्टि का निर्माण कर सकता है।

ऐसे ही हमारे मंडल में कार्यरत कई ऐसे कर्मचारी हैं, जो अंदर से कवि, कथाकार, लेखक, चित्रकार या कलाकार हैं। जो अपने भीतर विभिन्न कलात्मक प्रतिभाओं को छुपाए बैठे हैं। उनकी रचनाएं कभी डायरी के पन्नों से निकलकर बाहर नहीं आ पाती।

'काशी प्रतिबिंब' इन्हीं कलात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए एक उचित मंच प्रदान करता है। 'काशी प्रतिबिंब' के माध्यम से ऐसी ही अनेक कलात्मक सृष्टियों को एक माला में पिरोने का यह प्रयास प्रशंसनीय है। साथ ही, इस अंक की सफलता की कामना करते हुए इस प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

(रामाश्रय पाण्डेय)
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश



अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल की हिंदी पत्रिका 'काशी प्रतिबिंब' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी हमारे देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हमारे देश में केंद्र सरकार के अधीन सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज की भाषा हिंदी है। हिंदी को राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 को संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई।

राजभाषा हिंदी के उन्नयन व विकास में हम सभी को एक साथ मिलकर काम करना होगा तथा अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने का प्रयास करना होगा। यह हमारे मौलिक कर्तव्यों में से एक है।

इस दिशा में राजभाषा विभाग का कार्य प्रशंसनीय है, जिन्होंने 'काशी प्रतिबिंब' नामक इस पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों के भीतर हिंदी के प्रति रुचि पैदा करने में एक अच्छा प्रयास किया है तथा कर्मचारियों के कलात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने हेतु एक उचित मंच प्रदान किया है।

मुझे आशा है कि आप सभी हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग व प्रसार के लिए संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप अपने सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करते रहेंगे। 'काशी प्रतिबिंब' के इस अंक की सफलता की कामना करते हुए मैं इस प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं यह आशा करता हूँ कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी सभी अधिकारी / कर्मचारी इसी उत्साह के साथ नए विचार व लेख प्रस्तुत करते रहेंगे।

(राहुल श्रीवास्तव)

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
सह अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संपादकीय



पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल की हिंदी पत्रिका 'काशी प्रतिबिंब' के 27वें अंक को आप सबके साथ साझा करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिंदी भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब है। राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक चेतना को एक सूत्र में पिरोने और जोड़ने की क्षमता के कारण हिंदी संपूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति का साक्षात्कार कराती है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि G20 अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह दुनिया की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की दिशा और दशा तय करता है। इस साल भारत G20 देशों की अध्यक्षता के पद पर कार्यरत है। G20 की अध्यक्षता के जरिए भारत को दुनिया भर के देशों के सामने ब्रांड इंडिया की छवि को मजबूत बनाने का मौका मिलेगा। देश के 50 शहरों में G20 से जुड़े आयोजनों की तैयारी का लक्ष्य रखा गया है। इन कार्यक्रमों के जरिए दुनिया के देशों में भारत के पर्यटन स्थलों की लोकप्रियता बढ़ेगी। दुनिया भर के देशों के बीच भारत में बने उत्पादों की पहुंच बढ़ेगी। इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। साथ ही, इसके माध्यम से अन्य देश हमारी संस्कृति और सभ्यता से भी जुड़ सकेंगे।

'काशी प्रतिबिंब' के माध्यम से हमारे कर्मचारियों के कलात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने के साथ-साथ हमारे मंडल की विविध गतिविधियों को भी उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। हमें अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से यह अपेक्षा है कि वे अपने दैनिक कार्यालयी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देंगे और राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में अपना योगदान देंगे। राजभाषा विभाग आपके सहयोग व सहायता के लिए सदैव तत्पर है। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आपके बहुमूल्य विचारों व लेखों की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

(प्रदीप कुमार सिंह)
राजभाषा अधिकारी
सह सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

काशी प्रतिबिंब

अंक 27

वाराणसी मंडल की राजभाषा पत्रिका

जून -2023

संरक्षक

रामाश्रय पांडेय

मण्डल रेल प्रबंधक

परामर्शदाता

ज्ञानेश त्रिपाठी

अपर मण्डल रेल

प्रबंधक (परि.)

प्रधान सम्पादक

राहुल श्रीवास्तव

अपर मण्डल रेल

प्रबन्धक (इन्फ्रा.)

सह अपर मुख्य

राजभाषा अधिकारी

सम्पादक

प्रदीप कुमार सिंह

सहायक मंडल

संरक्षा अधिकारी

सह राजभाषा अधिकारी

सम्पादन सहयोग

पूनम त्रिपाठी

वरिष्ठ अनुवादक

ममता यादव

वरिष्ठ अनुवादक

अजय कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

अमित कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

पत्र व्यवहार

संपादक

काशी प्रतिबिंब

राजभाषा विभाग

पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

ईमेल : rba.ner.bsb@gmail.com

इस अंक में

क्र.सं. रचना

रचनाकार

पृष्ठ सं.

1- मेनोपॉज – लक्षण एवं उपचार

डॉ. कल्पना दुबे

2

2- अहसास

डॉ. कल्पना दुबे

3

3- शिवानी : कृष्णवेणी

नीरू अवस्थी

4

4- ज़िंदगी

सौरभ कुमार शर्मा

6

5- अभिलाषा

श्रीमान एल. के.राय

6

6- पर्यावरण संरक्षण

अजय कुमार सिंह

7

7- विभाजन की विभिषिका

स्मृति दिवस : 14 अगस्त

मनोज कुमार दूबे

9

8- सफ़र [भाग-1] (गीत)

अमित कुमार साव

10

9- मैं और मेरे पंख कीर्ति राज

11

10- नारी अस्मिता और साहिर लुधियानवी

डॉ. इरशाद अहमद

14

11- सफ़र [भाग-2] (गीत)

अमित कुमार साव

17

12- अंग्रेजी साहित्य से जुड़े-

हिंदी साहित्य साधक

डॉ वेद प्रकाश पाण्डेय

18

13- जी-20 : वसुधैव कुटुम्बकम्

पूनम त्रिपाठी

23

14- रंगीन आसमान

शिवानी सिंह

24

15- श्राद्ध खाने नहीं आऊंगा कौआ बनकर

उपेन्द्र यादव

26

16- आज के शिक्षक

मुनीन्द्र कुमार पाण्डेय

27

17- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

मनोज कुमार श्रीवास्तव

28

18- संस्कृति युद्ध

सुशील कुमार

30

19- पितृऋण

संजय कुमार गुप्ता

31

20- जीवन की परिभाषा

विकास केशरी

34

21- स्वतंत्रभारत@75:सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

ममता यादव

35

22- शायद....

नीरू अवस्थी

38

23- एफ.आई.आर.

मु० अब्बास रिजवी

39

निःशुल्क वितरण के लिए

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं)

मेनोपॉज का मतलब है महिलाओं में प्रत्येक महीने होने वाले मासिक का पूरी तरह से बंद होना जो आमतौर पर 45 से 50 वर्ष की उम्र में होता है। किसी महिला में मेनोपॉज होने पर ओवरी अंडे रिलीज करना बंद कर देती है और साथ ही शरीर में एस्ट्रोजन एवं प्रोजेस्टेरोन हार्मोन का स्तर कम हो जाता है। इस कारण से महिला में प्रजनन की क्षमता खत्म हो जाती है। शरीर में हार्मोन की कमी से कई समस्याएं पैदा होती हैं, जिसे पहचानना जरूरी है, तभी उचित इलाज संभव हो पाएगा।

मेनोपॉज के लक्षण –

1. मासिक की अनियमितता जैसे स्पोर्टिंग या अनियमित रक्त स्राव
2. हॉट फ्लैशेस (अचानक गर्मी महसूस करना)
3. योनि में बदलाव (वेजाइनल ड्राइनेस)
4. नींद न आना
5. मूड में बदलाव होना
6. वजन बढ़ना
7. थकान व कमजोरी के साथ जोड़ों का दर्द
8. यूरिन लीकेज

उपचार -

1. 40 वर्ष की उम्र के बाद अपना पूरा हेल्थ चेकअप डॉक्टर की सलाह से करवा लेना चाहिए।
2. महिलाओं को अपने जीवन शैली के साथ साथ पोषक आहार पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। तेल और मसालेदार भोजन, धूम्रपान, शराब और अवसाद की स्थिति से बचना चाहिए।
3. रात में सोने से पहले मेडिटेशन करने से मन को शांत करने से नींद आसानी से आ सकती है। अधिक चिड़चिड़ापन या मूड में बदलाव आने पर मनोचिकित्सक की सलाह भी ली जा सकती है

क्योंकि यह अवसाद भी हो सकता है।

4. मेनोपॉज के बाद महिलाओं में मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है, जिससे वजन बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसी डायटीशियन की सहायता से आहार में जरूरत के मुताबिक कैलोरी व पोषक तत्वों को शामिल करना चाहिए और सप्ताह में कम से कम 5 दिन आधे घंटे के लिए व्यायाम आवश्यक रूप से करना चाहिए।

5. मेनोपॉज के दौरान शरीर में कैल्शियम की मात्रा में भारी गिरावट देखने को मिलती है। विटामिन डी व कैल्शियम की कमी होने से हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं, इसलिए पर्याप्त मात्रा में इनका सेवन चाहिए।

6. योनि में बदलाव (वेजाइनल ड्राइनेस) मुख्यतः शरीर में एस्ट्रोजन के कमी के कारण होता है जिस कारण सेक्स में अरुची हो सकती है। डॉक्टर की सलाह से लुब्रिकेंट्स के प्रयोग से इस समस्या का निदान संभव है।

7. मेनोपॉज के बाद स्पोर्टिंग या अनियमित रक्तस्राव गर्भाशय के कैंसर या किसी अन्य गंभीर बीमारी के लक्षण भी हो सकते हैं। इसलिए इलाज में किसी भी प्रकार की देरी से बचें।

8. पब्लिक मसल्स से जुड़ी एक्सरसाइज के साथ लोकल एस्ट्रोजेन क्रीम के इस्तेमाल से यूरिन लीकेज की समस्या में काफी आराम हो जाता है।

9. हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी (एच. आर. टी.) का मुख्य उद्देश्य हॉट फ्लैशेस एवं अन्य लक्षणों का इलाज करना है जो मेनोपॉज के दौरान महिलाओं में एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन की कमी के कारण होते हैं। इसके उपयोग के निम्नलिखित तरीके हो सकते हैं- गोली लेनी, त्वचा पैच (अपने देश में कम प्रचलित), योनि में लगाने की क्रीम, त्वचा के अंदर इम्प्लांट करना, गर्भनिरोधक उपकरण (काँपर टी)।

काशी प्रतिबिंब

जिन महिलाओं की हिस्टेरेक्टॉमी (सर्जरी द्वारा गर्भाशय का निकाला जाना) हो चुकी है, उन्हें केवल एस्ट्रोजन दिया जा सकता है। परंतु जिन महिलाओं में गर्भाशय है उन्हें गर्भाशय के कैंसर से बचाव करने के लिए साथ में प्रोजेस्टेरोन भी देना आवश्यक है। एच. आर. टी. के फायदे के साथ-साथ नुकसान दोनो होते हैं

जैसे - मतली

बाल झड़ना

मांसपेशियों में दर्द अंडाशय,

गर्भाशय और स्तन कैंसर में वृद्धि

स्ट्रोक का खतरा

अतः यह थेरेपी डाक्टर की सलाह से ही करना चाहिए और जहाँ तक संभव हो कम से कम मात्रा में व कम से कम समय तक करनी चाहिए। अगर आप लगातार एच. आर. टी. का उपयोग कर रहे हैं तो समय-समय पर डॉक्टर के परामर्श से जरूरी जांच कराना अति आवश्यक है।

वरिष्ठ मण्डल चिकित्सा अधिकारी
मण्डल चिकित्सालय, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

आज बहुत सी शिक्षा
स्मारकीय रूप से अप्रभावी है।

हम युवाओं के फूल
काट रहे हैं जबकि हमें
उन्हें अपने स्वयं के पौधों
को उगाने के प्रति
प्रेरित करना चाहिए।

अहसास

डॉ. कल्पना दुबे

कल जरूर सब्र का मीठा निकलेगा,
तभी तो हमारी समस्या का
कोई हल निकलेगा।

अगर मन में तुम्हारे श्रद्धा का भाव होगा,
तो लोटे के पानी में भी
गंगाजल निकलेगा।

कल जब तुम उड़ने लगोगे
दूर आसमान में,
तुझे सलामी देन पैरों तले से
बादल निकलेगा।

माँ का आशीर्वाद अगर
सदा साथ है तेरे,
हर मुसीबत से बचाने को
आँचल निकलेगा।

यदि हम सब के खातिर
कुर्बान भी हो जाएँ,
फिर भी मेरे जीवन की
रस्सी से न बल निकलेगा।
लोगों से बदलने की आरजू
उसने कर ली बहुत
अब वह खुद समाज को बदलने
की तलाश में चल निकलेगा।

वरिष्ठ मण्डल चिकित्सा अधिकारी
मण्डल चिकित्सालय, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

“शिवानी” उर्फ गौरा पंत एक जानी-मानी कहानीकार, उपन्यासकार तथा प्रसिद्ध साहित्यकार थीं। उनके लिखे हुए उपन्यास एवं लघु कथाएँ बहुत ज्यादा जन-साधारण को पसंद आने वाली हैं। जिन्हें बहुतायत से लोग बहुत उत्साह से पढ़ते हैं, ये एक ऐसे व्यक्तित्व की मालिक थीं, जिनका हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाओं पर भी बहुत अच्छी पकड़ थी। ये “बहुभाषी”, “ज्ञानी”, एक शानदार लेखिका थी। कुमायूं, गढ़वाल की होने की वजह से उनकी लेखनी में “लोक संस्कृति एवं पहाड़ी जीवन” की अदभुत झलक देखने को मिलती है। उनके उपन्यास एवं कहानियों में “नारी चरित्र” का अदभुत चित्रण रहा है या यूँ कहा जाए कि ‘नारीप्रधान लेखनी’ रही, जिसमें स्त्रियों के अदभुत, अलौकिक सौन्दर्य एवं सौम्य रूप का वर्णन बहुत विशिष्टता से किया गया। जिनमें से कृष्णवेणी की प्रेम में डूबी मर्मकथा बेजोड़ है। वो अपनी कहानियाँ या उपन्यास इस भाव से लिखती थीं कि लोग दिल लगा के पढ़ते थे। उनके उपन्यास व कहानियाँ सदैव कौतुहल का विषय रहे हैं, ये जानने का मन होता कि आगे क्या होगा, ऐसा लगता कि उपन्यास कभी खतम ही ना हो, बस पढ़ते ही जाएँ। मैंने शिवानी जी के लिखे बहुत से उपन्यास का अध्ययन किया, जिनमें से कृष्णकली, कृष्णवेणी, अतिथि, भैरवी, कैजा, रति विलाप, शमशान चंपा इत्यादि प्रमुख उपन्यास रहे हैं।

इसी क्रम में मैंने जब “कृष्णवेणी” का अध्ययन किया तो ऐसा लगा कि कितनी सहजता से उन्होंने नारी के अनोखे, रहस्यमयी चरित्र का वर्णन किया। कृष्णवेणी उपन्यास में कृष्णवेणी के साथ

अन्य लघु कहानियाँ भी सम्मिलित हैं। देखा जाये तो एक नारी ही नारी की मानसिक स्थिति, मन के भाव एवं मनोविज्ञान को समझ सकती है और उसका उल्लेख कर सकती है। कृष्णवेणी एक अति सुन्दर, तेजोमय दर्प की दमक से दमकती तमिल युवती है जिसने शान्तिनिकेतन से शिक्षा प्राप्त की। उनके पिता अति धनवान हैं, वो माता-पिता की इकलौती संतान है। उसको विचित्र प्रकार की “दिव्यशक्ति की अभिव्यक्ति का वरदान” प्राप्त है, वह एक भविष्य-वक्ता है। कृष्णवेणी केरल के छात्र भाषकरन से प्रेम करती है और उससे विवाह करना चाहती हैं किन्तु कृष्णवेणी के पिता इस विवाह के सख्त खिलाफ हैं, क्योंकि भाषकरन के पिता कुष्ठ रोगी है, वो उसका विवाह परम्परा अनुसार उसके छोटे मामा से करना चाहते हैं। एक दिन उसको पता चलता है कि भाषकरन सब कुछ छोड़ कर कहीं चला गया है। वह बहुत उदास होती है और विदेश चली जाती है। वह अपनी दिव्य दृष्टि से अपना स्वयं का भविष्य नहीं देख पाती किन्तु भाषकरन का भविष्य देखती है कि वह अल्मोड़ा के कुष्ठ आश्रम में भर्ती है। वह उसकी अधूरी मुठियाँ होंठ विहीन विभत्स चेहरा देख बहुत दुखी होती है और अपनी कार एक तीखी घाटी में कूदा कर आत्महत्या कर लेती है। कुछ वर्षों उपरांत परलोक के यात्री इस लोक में मिलने आते हैं, कृष्णवेणी की आत्मा आती है और जाते जाते कहती है कि “अगली बार भाषकरन को ले कर आऊँगी, क्यों मिलना चाहोगी ना उससे” इस लोक में नहीं उस लोक में वह अपने प्रेमी से मिल अपनी अधूरी इच्छा पूरी करती है।

काशी प्रतिबिंब

कृष्णवेणी उपन्यास में मैंने देखा कि उपन्यासकार शिवानी लोकप्रियता के शिखर को छुने वाली एक संवेदनशील एवम भावना प्रधान लेखिका हैं। उन्होंने अपनी प्रेम रस में डूबी मार्मिक कहानी में कल्पना के साथ-साथ अपने रोचक अनुभवों को भी साकार किया है। उनका काफ़ी जीवन शांति निकेतन, पहाड़ों में बीता तो उन्होंने अल्मोड़ा के पहाड़ों के अदभुत सौन्दर्य का जिक्र किया। साथ ही साथ उनकी नायिका शान्ति निकेतन से अध्ययन करती है एवं अपने अदभुत व्यक्तित्व का सिक्का जमा लेती है। गुरुजन कहते, “ऐसी प्रतिभाशाली छात्रा वहाँ कभी नहीं आयी”। उन्होंने नायिका को हमेशा से बहुत महत्व दिया है, उनकी नायिका परम ज्ञानी, चलता फिरता शब्दकोष अलौकिक रूप सौन्दर्य, चेहरे पर परम तृप्ति की विजयी मुस्कान एवम ज्ञान से परिपूर्ण रहती हैं। इसकी वजह से उनका उपन्यास “नायिका प्रधान” रहा है। जिससे उनके सारे “किरदारों में जीवन्तता” प्रतीत होती है। उन्होंने अपने उपन्यास में नारी जीवन की विविध-विधाओं, रीति-रिवाजों का एवं मानव जीवन में आने वाली विविध समस्याओं को दर्शया है। जिससे पाठक के मन में भी वो ही भावना आती है, वो किरदारों के साथ-साथ चलते हैं। उन्होंने अपने संपर्क में आये व्यक्तियों को करीब से देखा तथा उनकी मनोदशा, व्यक्तित्व का बखूबी वर्णन किया। साथ ही सामाजिक रूढ़िवादियों, रीति-रिवाजों, विवाह प्रथा का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कृष्णवेणी एवं उनके परिवार का इतना सजीव चित्रण किया है कि ऐसा लगता कि किरदार हमारे आस-पास के ही हों, भाषकरन से प्रेम विवाह न कर पाना एवं कुष्ठ रोग से ग्रसित होना दुखद प्रतीत होता है। उनके उपन्यास में हरदम एक

“जिज्ञासा” बनी रहती कि अब क्या हुआ, उपन्यास के किरदार सदैव “गतिशील” रहे हैं, एक दायरे में बंधे नहीं रहते। तभी तो कृष्णवेणी शान्तिनिकेतन में अध्ययन प्राप्त की, विलायत जाती है, तो कभी अल्मोड़ा। उसके जीवन की परिस्थितियाँ उसको यहाँ-वहाँ घुमाती है। कृष्णवेणी के चरित्र में दृढ़ संकल्प दिखता है, बंदिश नहीं। वो झुकती नहीं है, पूरे आश्रम के वह निरंशुक साम्राज्ञी है। शायद इसीलिए तो उनके किरदार में परिलक्षित होता कि “उसकी इच्छा इस लोक में पूरी नहीं होती तो उस लोक में पूरी करती है”। उनका लेखन आज तक सभी वर्ग के पाठकों को उपन्यास पढ़ने को प्रेरित करता है।

कार्यालय अधीक्षक
म.रे.प्र. (कार्मिक)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी



जिस प्रकार केवल एक ही बीज पूरे जंगल को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त है, उसी प्रकार एक ही मनुष्य विश्व में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए पर्याप्त है।

- स्वामी विवेकानंद

जिंदगी

सौरभ कुमार शर्मा

सोचिए कि आप कहीं दूर शहर के कमरे में अकेले रहते हों, खाने पीने का कोई ढंग ठिकाना नहीं है और जिंदगी के दोनों छोरों को मिलाने में सुबह से शाम तक व्यस्त। सूरज के डूबने के बाद जब आप कमरे में आते हैं तो भूखे होने के बावजूद आधे घंटे लेटना पसंद करते हैं, थकान भूख के अहसास पर हावी होती है। उठकर चाय बनाते वक्त ख्याल आता है कि चाय पर उस शख्स का साथ होना चाहिए था जिसकी हंसी आँखों के प्याले से पीकर आप अपनी तबियत को थोड़ा सुकून पहुँचा पाते, मगर आपके साथ सिर्फ आपकी तन्हाई है और तन्हाई को दूर करने का ज़रिया आपका फोन है, जो थोड़े से वक्त के लिए सही पर आपको अपनी से जोड़ता है।

आप रोज़ की तरह माँ से बात करते हैं, किसी दिन अच्छी खबर मिलती है, किसी दिन बुरी। आप अपने दोस्तों से मज़ाक करते हैं पर किसी भी हाल में चाय खत्म होने से पहले ही आपको कल की सोंच बेचैन करने लगती है और आपके दो घंटे उसमें लग जाते हैं। आप रात का खाना उस फ़कीर की तरह खाते हैं जिसे सारा दिन मारे फिरने के बाद किसी दरवाज़े पर रोटी मिलती है और इन सब के बाद जिंदगी के ठहरने के बारे में सोचते हुए आपकी आँख लग जाती है।

अगले दिन फिर से वही भाग-दौड़। .

शायद जीना इसी का नाम है.....

काँटावाला
दीदारगंज रोड
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

अभिलाषा

एल. के.राय

नभ में विचरण करने वाला
पंछी भी थक जाता है।
तभी सांझ को किसी झुरमुट में
धीरे-से छुप जाता है।
मेरा जीवन निर्झर झरना,
बस चलता ही जाता है।
आकांक्षा और अभिलाषा में,
कहीं ठौर नहीं पाता है।
नभ में विचरण करने वाला
पंछी भी थक जाता है।

मत देखो उस आसमान को,
जिसका अंत नहीं है कोई।
मृगतृष्णा है जीवन सुख,
कोई पास पहुँच नहीं पाता है।
नभ में विचरण करने वाला
पंछी भी थक जाता है।

संतोषी हो जीवन जिसका
परम सुख वही पाता है।
ऋषियों का यह परम ज्ञान
क्यों हमें समझ नहीं आता है।
नभ में विचरण करने वाला
पंछी भी थक जाता है।
तभी सांझ वो किसी झुरमुट में
धीरे-से चुप जाता है।

सहायक परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

हम अगर हमारे चारों ओर देखें तो ईश्वर की बनाई इस अद्भुत पर्यावरण की सुंदरता देख कर मन प्रफुल्लित हो जाता है। पर्यावरण की गोद में सुंदर फूल, लताएँ, हरे-भरे वृक्षों से भरा वन, चहचहाते पक्षी हैं जो आकर्षण का केंद्र बिंदु हैं। मानवों की कभी न खत्म होने वाली मांगों का खामियाजा अगर सबसे ज्यादा कोई उठा रहा है तो वह है, 'प्रकृति'।

महात्मा गांधी ने कहा है 'पृथ्वी हर मनुष्य की जरूरत को पूरा कर सकती है परंतु मनुष्य के लालच को नहीं'। हम विकास के नाम पर प्रकृति को बर्बाद करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं, फिर बात चाहे पर्यावरण की हो, प्राकृतिक संसाधनों की हो या फिर जैव विविधता की।

जैव विविधता - संयुक्त राष्ट्र द्वारा जैव विविधता पर जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार धरती पर मौजूद 10 लाख से ज्यादा जीवों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। यह रिपोर्ट न केवल हमें आईना दिखाती है बल्कि आगाह भी करती है।

रामचरितमानस में जैव विविधता का महत्व - आप रामचरित मानस को पढ़ेंगे तो पायेंगे कि वहाँ किस प्रकार से जैव विविधता को बचाने का प्रयास किया गया है। माता सीता की रक्षा करने के लिए जो सबसे पहले आगे आए वो जटायु थे। जटायु एक गिद्ध प्रजाति के थे और आज गिद्धों पर सबसे बड़ा खतरा है। रामचंद्र सीता जी को ढूँढ़ रहे थे तो वे इंसानों से नहीं बल्कि पर्यावरण के जीव-जंतुओं से पूछ रहे थे - 'हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥' श्री राम पंचवटी में रहे जो जैव विविधता का क्षेत्र है। विभिन्न प्रकार के वानर, भालू ने उनकी सहायता की, यह भी जैव विविधता का हिस्सा है।

अगर हमने पर्यावरण को बचाने के लिए उचित कदम नहीं उठाए तो बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती

है। विभिन्न रिपोर्ट्स के मुताबिक 2000 के बाद से वैश्विक जंगलों का तकरीबन 7% हिस्सा नष्ट हुआ है। साल 2021 चरम मौसमी घटनाओं का वर्ष दर्ज किया गया। कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ हिस्सों में तापमान रिकॉर्ड स्तर तक पहुँच गया जिससे सैकड़ों लोगों की जान गई। इसके अलावा जर्मनी में आई बाढ़ से देश के 180 से अधिक लोगों की जान गई। भारत भी इस संकट से अछूता नहीं है। भारत में भी पश्चिमी और पूर्वी तटों से टकराने वाले चक्रवातों का प्रभाव रहा।

वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग और बदलते मौसम के पैटर्न के बीच एक मजबूत लिंक की बात कही है। एक अध्ययन के अनुसार हीट वेव और अत्यधिक वर्षा जैसी चरम मौसमी घटनाएँ बढ़ते मानव जनित जलवायु परिवर्तन के चलते हैं।

जलवायु परिवर्तन - जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। इसके कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहें हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। जिससे प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीपों के डूबने का खतरा है।

ग्लोबल वार्मिंग - ग्रीन हाउस गैसें, जैसे Carbon dioxide, CFCs - chlorofluorocarbon, HFC - Hydro fluorocarbon पृथ्वी के वायु मण्डल में मौजूद होती हैं। ग्रीन हाउस गैसों की प्रतिशतता में बढ़ोतरी के कारण वायुमंडल से बाहर जाने वाले सूर्य प्रकाश की ऊष्मा की ट्रेपिंग जरूरत से ज्यादा हो गयी है जो ग्लोबल वार्मिंग का कारण है।

समाधान - पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे जरूरी आवश्यकता है। अगर इस पर ठोस कदम नहीं उठाए गए तो भावी पीढ़ी को गंभीर

काशी प्रतिबिंब

परिणाम भुगतने होंगे। इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं -

- अधिक से अधिक जन जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।

- वनों की कटाई को रोका जाना चाहिए।

- प्राकृतिक नॉन-रिन्यूएबल रिसोर्सेज का उचित उपयोग किया जाना चाहिए।

- हर साल, हम जंगल की आग के कारण बड़ी संख्या में वन जीवन खो देते हैं। हमें इसका समाधान खोजना होगा।

- एफोरेस्टेशन पर्यावरण के संरक्षण का सबसे अच्छा तरीका है इस पर जोर देने की आवश्यकता है।

- प्रदूषण और जनसंख्या को नियंत्रित करने की आवश्यकता है।

- लोगों को पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाना चाहिए।

- वेस्ट मैनेजमेंट टेक्नीक्स को अपनाने पर जोर देने की आवश्यकता है।

- विनाश के कगार पर मौजूद प्रजातियों को बचाया जाना चाहिए।

- पर्यावरण के लिए हानिकारक पदार्थों या गतिविधियों पर कर लगाया जाना चाहिए।

- पर्यावरण के लिए अनुपयुक्त और प्रदूषणकारी वाहनों की चरणबद्ध तरीके से समाप्ति की जानी चाहिए।

संवैधानिक प्रावधान - पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम- 1986 (Environment Protection Act-1986) को भारतीय संविधान के 'अनुच्छेद 253' के तहत अधिनियमित किया गया था। यह केंद्र सरकार को सभी रूपों में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने और देश

के विभिन्न हिस्सों में विशिष्ट पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए प्राधिकरण स्थापित करने हेतु अधिकृत करता है। यह अधिनियम पर्यावरण के संरक्षण और सुधार हेतु व्यापक कानूनों में से एक है। अनुच्छेद 48A के अनुसार राज्य पर्यावरण की रक्षा व वन्य जीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा। अनुच्छेद 51A में प्रावधान है कि प्रत्येक नागरिक पर्यावरण की रक्षा करेगा।

पेरिस जलवायु समझौता 2015 - इसमें वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए समझौता हुआ है। इसमें सभी देशों को कार्बन उत्सर्जन 2030 तक आधा करने और 2050 तक 'नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन' तक पहुंचने की आवश्यकता है।

किगाली संशोधन - यह वर्ष 2016 में हुआ था। इसके तहत 2050 तक का लक्ष्य है। अमेरिका, चीन व भारत इसमें शामिल हैं। अमेरिका को 2034 तक, चीन को 2045 तक तथा भारत को वर्ष 2047 तक HFC का 80% उपयोग कम करना है।

विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाता है। सबसे पहले इसकी चर्चा वर्ष 1972 में मानव पर्यावरण पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन दौरान हुई थी। विश्व पर्यावरण दिवस पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर केंद्रित है। हर बार अलग-अलग देश इस दिवस की मेजबानी करते हैं तथा पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्रयास करते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए हर मनुष्य को प्रयास करना होगा तभी वातावरण मनुष्य के अनुकूल होगा। अन्यथा हमें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

कनिष्ठ अनुवादक
म.रे.प्र. (राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

15 अगस्त 1947 को अखण्ड भारत खंडित रूप में स्वतंत्र घोषित हुआ; परंतु यह खंडित स्वतंत्रता बहुत भारी मूल्य चुका कर प्राप्त हुई। वैसे तो अखण्ड भारत को खंडित करने की नींव काफ़ी पहले ही पड़ चुकी थी। जिसमें कई मुस्लिम नेताओं, तथाकथित विद्वानों के विभिन्न सम्मेलनों, लेखों, पुस्तकों, बैठकों या तकरीरों से परिचालित होता है। जिसमें सर सैय्यद अहमद (अलीगढ़), मोहम्मद इकबाल (निवासी जम्मू-कश्मीर) तथा मोहम्मद अली जिन्ना (गुजरात) का नाम प्रमुखता से आता है। किसी भी राष्ट्र का विखंडन कोई एक दिन में घटने वाली घटना नहीं होती है।

हम भारतवासी युगों-युगों से एक सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, खान-पान, एक दर्शन को मानने वाले परिवार से थे। भारत की धर्मप्राण सनातन जनता विभाजन सोचती भी नहीं थी। परंतु पश्चिम से आए विचारधारा एवं मान्यताओं वाले लोग इसका षडयंत्र बहुत वर्षों से करते चले आ रहे थे। मेरी बात की पुष्टि 1906 के बंगाल विभाजन से भी देखी जा सकती है। अंग्रेजों ने बंगाल के मुस्लिम बहुल क्षेत्र को शेष बंगाल से अलग कर दिया था। जिसके विरोध में बंगाल में इतना प्रचंड आंदोलन हुआ कि अंग्रेजों को बंग-भंग वापस लेना पड़ा, साथ ही उन्हें राजधानी दिल्ली को बनानी पड़ी। 1-1 लाख लोग गंगा जी के पानी में घुसकर, मुट्ठी भींचकर बंग-भंग का विरोध करने की शपथ लेते थे। इसमें गोपाल पाठा जैसे नौजवान क्रांतिकारी भी थे। अंग्रेजों ने सर्वप्रथम

ब्रिटिश इंडिया के अंतर्गत 26 मई 1876 को रूसी और ब्रिटिश शासकों (भारत) के बीच गंडामक संधि के रूप में अफगानिस्तान को एक बफर स्टेट के रूप में अलग कर दिया। इसके कारण पठान स्वतंत्रता संग्राम से अलग हो गए। 18 अगस्त 1919 को ही अफगानिस्तान स्वतंत्र देश बन गया। अखण्ड भारत के 16 महाजनपदों में संभवतः बलूचिस्तान गांधार जनपद का हिस्सा था जो वर्तमान में पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान में चला गया है।

नेपाल जहाँ माता सीता जी का जन्म हुआ तथा लुम्बिनी जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। यह नेपाल कभी मौर्य शासकों के साम्राज्य का हिस्सा था। उसे भी अंग्रेजों ने 1904 में अलग देश का दर्जा दे दिया। भूटान जो कभी विदेही जनपद का हिस्सा था उसे अंग्रेजों ने 1906 में भारत से अलग कर दिया।

भूटान संस्कृत के भू-उत्थान शब्द से बना है। तिब्बत को त्रिविष्टप कहा जाता था। यहीं से वेदों के श्रुति और स्मृति की परंपरा चली थी। अंग्रेजों में 1907 में भारत-चीन के बीच बफर स्टेट (राज्य) का दर्जा देकर इसे अलग कर दिया। गोरों ने श्रीलंका को 1935 में तथा बर्मा (म्यांमार) को 1937 में भारत से अलग कर दिया। श्रीलंका पहले चोल और पांडय जनपद का भाग था। उसी तरह प्राचीन भारत (आर्यावर्त) के मलय प्रायद्वीप के जनपद मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, वियतनाम और कंबोडिया समय-समय पर भारत से अलग होते चले गए। इन स्थानों में आज भी सनातन संस्कृति के दर्शन विभिन्न

अमित कुमार साव

मन भागा जाये आड़े – टेढ़े रस्तों पर
ले जाये मुझको नगर – नगर,
और डगर – डगर
ले जाये बावरा, कच्ची – पक्की सड़कों पर
और कैसा सुंदर – सा
है मेरा ये सफ़र

है ये फ़िज़ाएँ, बुलाए, मुझे ले के जाए
अनजाने-से ये राहों पे ले के जाए
कुछ कानों में हवाएँ
मुझको है कहती जाए
तू चलता जा रे
ले जाये बावरा, कच्ची – पक्की सड़कों पर
और कैसा सुंदर – सा है मेरा ये सफ़र

जैसे कोई नन्हे हाथों से रंग उठाए
और तस्वीरें रंगीन – रंगीन सारे बनाए
वैसे ही दिल मेरा
यूँ तो इक बच्चा है
चुराए हसीन यादें
ले जाये बावरा, कच्ची – पक्की सड़कों पर
और कैसा सुंदर – सा है मेरा ये सफ़र

कनिष्ठ अनुवादक
म.रे.प्र. (राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

रूपों में मौजूद हैं। बताते चलें कि वियतनाम का प्राचीन नाम “चम्पा” था। यहाँ के लोग अभी १०० वर्ष पूर्व शैव मत को मानने वाले थे। वियतनाम में खुदाई में इसी वर्ष एक भव्य शिवलिंग प्राप्त हुआ है जो हजारों वर्ष पुराना है। फोटो के साथ इस शिवलिंग की जानकारी वर्तमान विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर जी ने अपने ट्विटर हैंडल से दी थी। सबसे ताजा विखंडन 1947 में हुआ जिसमें पश्चिम और पूर्वी पाकिस्तान का जन्म हुआ। पूर्वी पाकिस्तान अभी बांगलादेश के रूप में जाना जाता है। सिर्फ 1947 के भारत विभाजन में ही अनुमान के आधार पर लगभग 20 लाख लोग मारे गए थे तथा करोड़ों लोग विस्थापित हुए। लोगों का विस्थापन 1947 से आज तक जारी है तथा जो सनातनी इन दोनों देशों में रह गए हैं, उनकी हत्या, बलात्कार, बलात्कृत परिवर्तन करके मजहब में शामिल करना ये रोज-रोज के कृत्य बने हुए हैं।

मनोज कुमार द्वे
सेवानिवृत्त वरिष्ठ अनुवादक
म.रे.प्र. (राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि
कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह
देवनागरी ही हो सकती है।

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

अरे ! अरे ! रुकिए जरा जनाब! ऊपर लिखे गए टाइटल से आप यह मत समझ लीजिएगा कि मैं एक चिड़िया हूं .. जी, बिल्कुल नहीं। मैं एक इंसान हूं। आप ही की तरह दो हाथ और दो पैरों वाली, बस फर्क सिर्फ इतना है कि मैं भी आकाश में आजादी से मीलों दूर उड़ना चाहती हूं, सूर्य की रोशनी में उड़ना चाहती हूं, ठंडी बहती हवाओं को अपने चेहरे पर महसूस करना चाहती हूं, पूरी आजादी से दूर तक पाँव बिखेरे क्षितिज में खुद को महसूस करना चाहती हूं, मैं खुद अपने पांव पर खड़ी होना चाहती हूं।

मेरा नाम पाखी है और मैं उस शहर की रहने वाली हूं जहां न सिर्फ तीन नदियों का मिलन होता है बल्कि जहां पर लोगों का अपने सपनों से भी मिलन होता है। जी हां, मैं हूं इलाहाबाद शहर की रहने वाली। बचपन से पढ़ाई में अच्छे होने की वजह से मेरे घर वालों ने महज 2 साल 3 महीने में ही मुझे स्कूल भेजना शुरू कर दिया था। 12 वीं खत्म होते-होते मैंने आईपीएस बनने का सपना देखना शुरू कर दिया था। आप यकीन नहीं करेंगे अब तो रातों में सपने में भी मुझे आईपीएस की ट्रेनिंग दिखने लगी थी। कभी भी रास्ते पर पैदल चलती तो बस मन में यही लगता कि काश.... पीछे एक पुलिस का स्कॉट होता। आगे एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में जाने के लिए मुझे इलाहाबाद के ग्रेजुएशन एंट्रेंस एग्जाम के टाइम मम्मी से बहुत लड़ाई करनी पड़ी थी। वह चाहती थीं कि बारहवीं में पीसीबी होने के कारण मैं बी.एस.सी. करूँ, लेकिन मैं यू.पी.एस.सी. के एग्जाम में ऑप्शनल सब्जेक्ट सोशियोलॉजी रखना चाहती थी जिसके कारण मैं सोशियोलॉजी से ही अपना ग्रेजुएशन पूरा करना चाहती थी, पर बहुत दिनों तक चले नाराजगी

और गुस्से के बीच आखिर में सब ने मेरी बात मान ली और देखते ही देखते मैंने 3 साल में अपना ग्रेजुएशन कंप्लीट कर लिया। अब वह समय आ ही गया जब एक अहम फैसला लेना था, मुझे यूपीएससी की तैयारी के लिए दिल्ली जाना था, पर यह बात घरवालों से कौन कहता? दो-चार दिन मैंने पूरी कोशिश की किसी तरह मम्मी से इस विषय पर बात की जाए पर मेरी कोशिश हर बार ही व्यर्थ हो जाती। मम्मी हर बार बस यही कहती, "दुनिया जहान के बच्चे यहाँ इलाहाबाद पढ़ने आते हैं और एक इनको देखो इनको दिल्ली जाना है।" मम्मी की यह तीखे शब्द यूपीएससी का तो पता नहीं पर मेरा दिल हर बार तोड़ कर रख देते थे एंड इन्फैक्ट उस टाइम पीछे से बैकग्राउंड म्यूजिक भी सुनाई पड़ता था कि 'दिल के अरमां आंसुओं में बह गए।' एक दिन यूं ही छत पर बैठे - बैठे मैंने अपने फोन से गूगल पर सर्च किया 'कोचिंग क्लासेस स्टार्टिंग डेट फॉर यूपीएससी 2020' आप यकीन नहीं करेंगे कि जो चीज सर्च होकर मेरे फोन के स्क्रीन पर आई वह काफी डरा देने वाली थी कि ठीक 3 दिन बाद ही उस कोचिंग की रजिस्ट्रेशन डेट क्लोज हो जानी थी जहां में एडमिशन लेना चाहती थी। यह सब देखते ही मैंने एक बात तो यह तय कर लिया था कि आज चाहे कुछ भी हो जाए पापा से तो बात करके ही रहूंगी। अपने जीवन की सारी हिम्मत जुटाकर मैं पापा से बात करने उनके कमरे में गई बहुत देर पापा से बात करने और उन्हें समझाने के बाद आई गॉट ए गुड न्यूज़ कि यस मैं यूपीएससी की प्रिपेरेशन के लिए दिल्ली जा सकती हूं। फिर क्या था नेक्स्ट डे ही कोचिंग में ऑनलाइन अपना रजिस्ट्रेशन करा कर लिया जिससे मुझे यह पता चल गया कि मुझे कब दिल्ली जाकर अपनी

फीस डिपॉजिट करानी है उस कोचिंग में मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं कितनी खुश हुई, मानो डीडीएलजी मूवी में जैसे सिमरन के पापा ने उसे बोला था ना... "जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी" ऐसे ही मेरे पापा ने मुझे बोला हो। आई वर सो एक्साइटेड टू गो टू दिल्ली फॉर माई यूपीएससी प्रिपेरेशन। ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी ने मेरे सपनों को पंख लगा दिए हों मन खुशी से झूम उठा।

पर जैसे हर मूवी बिना ट्रेजडी के कम्प्लीट नहीं होती सिंपली मेरी लाइफ ने भी ऐसा यू-टर्न लिया कि मुझे कुछ संभलने का मौका ही नहीं मिला। जनाब मुझे ही क्या इस पूरी दुनिया को संभलने का मौका नहीं मिला। सब कुछ अपनी अपनी जगह पर ठहर गया जो, जहां था वहीं रह गया। शहर के शोर पानी जैसे शांत हो गए, सड़कों पर लगने वाला दूर तक गाड़ियों का जाम अब दूर रेगिस्तान में फैले रेत जैसे खाली हो गये, सारे स्कूल, कॉलेज, मंदिर सब बंद हो गए। हर तरफ इतना सन्नाटा हो गया मानो इस दुनिया से हम इंसानों का अस्तित्व ही मिट गया हो और इन सब के पीछे का जो कारण था, वह था कोविड वायरस। हाँ, वही शैतान जिसने पूरे २ साल तक हमारे इस संसार में मौत का डरावना तांडव किया था। बाहर सब कुछ बंद था और मेरे अंदर मेरी सांसे और दिल दोनों बंद हो जाना चाहती थी, दिमाग ने तो मानो अपना मुंह ही मुझसे मोड़ लिया हो कुछ भी समझने सोचने की शक्ति मुझ में नहीं बची थी। मेरी आँखों के सामने मेरा दिल्ली जाने का सपना गुजरते दिन के साथ ओझल हो रहा था। सब एक मृगतृष्णा सा लग रहा था। कान यह सुनने के लिए तरस गए थे कि हाँ.. हाँ, अब बाहर सब ठीक हो गया है, सब पहले जैसे सामान्य हो गया है। पर जब ईश्वर ही हम सब से रूठ गया हो तो कोई

भला कर ही क्या सकता है। खाली पड़ी सड़कों को देखते-देखते दिन महीनों में बदल गए और महीने साल में।

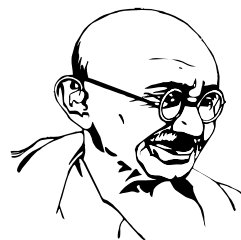
मुझे ठीक से याद है 13 मई 2021 कि वह तारीख जब मम्मी-पापा के कमरे के बाहर से गुजरते हुए मैंने सुना मम्मी पापा से कह रही थी, "लड़का देखने में दिक्कत ही क्या है?" 'लड़का'... यह शब्द सुनते ही मेरे तो दिल की धड़कन अपनी पूरी स्पीड से दौड़ने लगी थी, आँखें डर से बड़ी बड़ी हो गई थीं, हथेलियों में पसीना आ गया था, पूरे शरीर में डर से बहुत तेज गर्मी का एहसास हो रहा था। रात में यही बात सोचते हुए मैं छत पर टहल ही रही थी कि आखिर मम्मी-पापा कौन लड़का देखना चाहते हैं, और वह भी किसके लिए? मैं अपने इन कुछ अनसुलझे सवालों को समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी मम्मी छत पर आती हैं और एक कोने में मेरे समीप आकर खड़ी हो जाती हैं। पहले तो कुछ इधर-उधर की बातें करती हैं। फिर एकदम से बोल पड़ती हैं कि पाखी, मामी ने एक लड़का बताया है। उसका बायोडाटा पापा के फोन पर भेज दिया है। "हाँ, तो!", मैं बोल पड़ी। "हाँ तो क्या?", मम्मी ने कसकर कहा, "आजकल देख रही हो, कहाँ मिल रही है सरकारी नौकरी पिछले १ साल से सब बंद ही तो पड़ा है, लड़का रेलवे में है, देखने में भी सही है और उम्र में भी सही है।" यह सुनना ही मेरे लिए मानो ऐसा था कि इससे बुरा और कुछ हो ही नहीं सकता था, बस 'एंड' का बड़ा सा बोर्ड लगना ही बाकी था मेरी जिंदगी में। और इस बार मेरे घर वालों ने बाजी मार ली। आई सेड 'यस' टू माय दिस 'अरेंज वाली शादी'। हर इण्डियन शादी की तरह बहुत सारे तामझाम के साथ मेरी शादी हुई और मैं एक बहुत बड़े परिवार में गई।

कुल 17-18 लोगों का हरा-भरा स्वस्थ खुशहाल परिवार ससुराल की रोटी बहुत गाढ़ी होती है यह अब तक बस मैंने सुना ही था, बट यहाँ आकर देख भी लिया। शुरू से कभी खाना नहीं बनाया था तो जब कभी ससुराल में खाना बनाने की कोशिश करती तो कभी नमक कम होता तो कभी मिर्च ज्यादा होती। सब ने बहुत ताने दिए कि इन्हें कुछ बनाना नहीं आता। सुबह 10 बजे उठने वाली लड़की अब सुबह के 5 बजे उठने लगी थी, साड़ी के पल्लू में पिन लगाना नहीं आता था। हर दिन एक नई जंग लड़ रही थी मैं अपने आप से, अपने हालातों से, अपनी किस्मत से। पर लोग सही कहते हैं कि अगर सही जीवनसाथी मिल जाए तो जिंदगी खुशहाल और आसान हो ही जाती है। मेरे इस युद्ध में श्रीकृष्णरूपी सारथी बने थे मेरे 'जीवनसाथी', जिन्होंने हर दिन की चुनौतियों से लड़ने के लिए न मुझे तैयार किया अपितु अपार स्नेह, विश्वास और लगाव से मुझे समाज के सारे जंजीर रूपी रूढ़ीवादी रीति-रिवाजों से दूर अपने साथ ले जाकर फिर से उड़ने की एक नई रोशनी से परिचित कराया। मेरे खो चुके आत्मविश्वास को अपने पर्वत जैसे दृढ़ विश्वास से दोबारा मजबूत किया। कुछ माल पहले आँखों से ओझल हो चुके सपनों को फिर से खुले आसमान में उड़ने का रास्ता दिखाया। दूर तक फैले क्षितिज में अपने खुद के पंखों से उड़ने में मेरा साथ ठीक वैसे ही दिया जैसे एक पिता अपने बच्चे की उँगली थामकर उसे चलना सिखाता है, हर एक कदम पर उसे सम्हालता है, बचाता है, उसके कदम से कदम मिलाकर उसे चलना सिखाता है। कल तक जो शादी मुझे बिना किसी अर्थ की लग रही थी और जो इंसान एक अनचाहा अजनबी सा लग रहा था आज

वही शादी मेरी जिंदगी को अर्थपूर्ण बनाने में मेरी सहायता कर रही है और जीवनसाथी एक सारथी के रूप में मुझे मेरे जीवन के लक्ष्य तक पहुंचाने में एक अहम भूमिका निभा रहा है।

जीवन में कभी-कभी हम जो चाहते हैं वह होता नहीं है और जो होता है उससे अच्छा और कुछ हो भी नहीं सकता है। मुझे यह पूर्ण यकीन है कि जिस तरह से ईश्वर ने मुझे सपने देखने की काबिलियत दी है ठीक उसी तरीके से वही ईश्वर मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचाने में मेरी सहायता भी करेंगे। हौसला अब पहले से अधिक अडिग है, माना कि सफलता की ओर अग्रसर हर पथ कठिन होगा, पर इस पथ पर ही चलना अब मेरा दृढ़ होगा। 'सपने देखना' ईश्वर की खूबसूरत देन है हम इंसानों को, और उन्हें सच करना उससे भी खूबसूरत रचना होती है हम इंसानों की।

w/o- रणधीर प्रताप राव
कार्याधी / मरेप्र / कार्मिक / वाराणसी



राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी
को काम में लाना देश
की एकता और उन्नति
के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

हिन्दी फिल्म जगत में साहिर लुधियानवी और शकील बदायूनी दो ऐसे गीतकार हैं जिनपर बहुत कुछ लिखा गया है तथा यह क्रम अनवरत जारी है। इनमें साहिर अधिक सौभाग्यशाली हैं कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा राष्ट्रीय स्तर की नामचीन पत्रिकाओं के विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं। स्वीकार करने योग्य बात यह है कि साहिर के फ़िल्मी नग और साहित्यिक कृतियाँ लोकप्रिय, आकर्षक, अनूठे और अनुपम हैं। उनके पाठकों और श्रोताओं का दायरा काफी विस्तारित है जिन्हें जाति, भाषा, क्षेत्र, समुदाय और धर्म की रेखाओं से सीमित नहीं किया जा सकता है।

साहिर लुधियानवी की रचनाओं के गहन अध्ययन के बाद उनके जीवन, विचार, और चरित्र में नारियों के प्रति आदर एवं सम्मान का जो भाव उभरता है वह एक देवी का रूप है, त्याग एवं समर्पण की मूर्ति है और प्रेम एवं अपनत्व का प्रतीक है। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक के सफ़र में साहिर ने औरतों के कई रंग व रूप देखे हैं। माँ का निश्छल और पवित्र ममत्व देखा, तरुणावस्था का अबोध एवं अपरिपक्व प्यार देखा, जवानी की प्रौढ़ मुहब्बत देखी और बुढ़ापे का दुःख एवं तिरस्कार देखा। परन्तु किसी भी अवस्था में साहिर ने औरतों की अस्मिता, सम्मान और मान मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया। बल्कि संयम, समझ, आत्मबोध और विवेकशीलता का परिचय देते हुए नारी सम्मान का एक कृतिमान स्थापित किया।

साहिर के पिता चौधरी फजल मोहम्मद लुधियाना के जमीनदार थे तथा साहिर की माँ चौधरी की ग्यारहवीं पत्नी थी। इतनी सारी पत्नियों के बीच साहिर एक मात्र

पुत्र थे। इसलिए उनका बचपन बहुत लाड व प्यार में बीता। परन्तु फजल मोहम्मद से उनकी माँ सरदारी बेगम की नहीं बनी। वे सरदारी पर तरह तरह के जुल्म ढाते थे। तंग आकर साहिर की माँ ने फजल मोहम्मद पर जायदाद में अपनी हिस्सेदारी के लिए मुकदमा दायर कर दिया एवं अलग रहने लगी। माँ के साथ साहिर भी फजल मोहम्मद से अलग हो गये। साहिर के नन्हे मन में यह बात थी कि एक ना एक दिन पिता फजल मोहम्मद सीधी राह पर आ जायगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इस प्रकार पिता के तिरस्कार और माँ की दुख भरी मुहब्बत ने औरतों की मज़लूमियत का प्रथम पाठ पढ़ाया। फजल मोहम्मद चाहते थे की साहिर उनके साथ रहे परन्तु न्यायालय ने इसकी अनुमति नहीं दी। अब साहिर क़ानूनी तौर पर माँ के साथ रहने लगे। दस बारह वर्ष की उम्र में साहिर ने घर से न्यायालय तक माँ की दौडधूप और परशानियों का साक्षात सामना किया। साहिर की रक्षा के लिए उनकी माँ ने एक गार्ड भी रख लिया। साहिर ने जब शायरी शुरू की तो औरत नामक एक कविता लिखी। इस कविता में उन्होंने एक नारी के गौरव का बखान इस प्रकार किया है-

‘लोग औरत को फ़क्त जिस्म समझ लेते हैं
रूह भी होती है उस में ये कहाँ सोचते हैं
रूह क्या होती है उससे उन्हें मतलब ही नहीं
वह तो बस तन के तकाज का कहा मानते हैं
रूह मर जाए तो हर जिस्म है जलती हुई लाश
इस हकीकत को समझते हैं, न पहचानते हैं
कितनी सदियों से यह वहशत का चलन जारी है
कितनी सदियों से है कायम यह गुनाहों का रिवाज
लोग औरत की हर एक चीख को नगमा समझे
वह कबीलों का जमाना हो कि शहरों का समाज’

काशी प्रतिबिंब

एक अन्य स्थान पर माँ के सम्मान में ये पक्तियों लिखी हैं-

‘मैं कितनी खुश किस्मत माँ हूँ
मेरी गोद में पनप रहा है
धर्म का और ईमान का संगम
मेरा छोटा सा आँचल है
गीता और कुरान का संगम
सदियों जिस वरदान को तरसी
मुझ को वह वरदान मिला है
प्यार की इक डोरी में लिपटा
कल का हिंदुस्तान मिला है’

उपरोक्त पंक्तियों से सहज ही समझा जा सकता है कि साहिर उन लोगों पर तंज कर रहे हैं जो औरतों को केवल आकर्षक और उपयोग की वस्तु समझते हैं। शहर हो या गाँव, हर जगह औरतों का शोषण हो रहा है। इस प्रकार के वक्तियों के लिए साहिर की मान्यता है कि वे इन्सान नहीं बल्कि वहशी दरिन्दे हैं।

‘हम जो इंसानों की तहजीब लिए फिरते हैं
हम सा वहशी कोई जंगल के दरिन्दों में नहीं’

पुरुष प्रधान समाज में औरतों के अधिकार, सामाजिक एवं शैक्षणिक उत्थान की बातें गौण समझी जाती हैं। जागीरदारी एवं जमींदारी व्यवस्था में औरतों को वह स्थान नहीं मिलता है जो एक पुरुष को प्राप्त है। साहिर की माँ तथा अन्य सौतिनों की स्थिति बदतर थी। जब सरदारी बेगम अपने पति से अलग हो गई तो फजल मोहम्मद ने बारहवीं शादी कर ली। इस निरकुंश मानसिकता के वाहक केवल साहिर के पिता ही नहीं थे बल्कि अधिकतर

जागीरदार जमीनदारों और ताल्लुक्दार की यही मानसिकता थी। मुसलमानों में पुत्रों के साथ साथ पुत्रियों एवं पत्नियों को भी सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त है। परन्तु ऐसा कम देखने को मिलता है कि पुत्रियों और पत्नियों को सम्पत्ति में हिस्सेदारी मिली हो। इसके विपरीत उस समय औरतों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण आम बात थी। साहिर ने इन समस्याओं का गहरा अध्ययन किया तथा अपनी कविताओं में यथोचित स्थान दिया।

‘औरत ने जन्म दिया मर्दों को,
मर्दों ने उसे बाजार दिया
जब जी चाहा मसला, कुचला,
जब जी चाहा धुत्कार दिया
तौलती है कहीं दीनारों में,
बिकती है कहीं बाजारों में
नंगी चुनवाई जाती है,
अध्याशों के बाजारों में
ये वह बेइज्जत है चीज़ है
जो बंट जाती है इज्जतदारों में
औरत ने जन्म दिया.....
मर्दों के लिए हर जुल्म रवा,
औरत के लिए रोना भी खता
मर्दों के लिए हर ऐश का हक्क,
औरत के लिए जीना भी सज़ा
मर्दों के लिए लाखों सेजें
औरत के लिये बस एक चिता
औरत ने जन्म दिया.....
जिन सीनों ने उन्हें दूध दिया,
उन सीनों का व्यापार किया
जिस कोख में उनका जिस्म ढला
उस कोख का कारोबार किया
जिस तन से आए कॉपल बनकर

उस तन को जलील व ख्वार किया
औरत ने जन्म दिया.....
औरत संसार की किस्मत है,
फिर भी तकदीर की बेटी है
अवतार पैगंबर जनती है,
फिर भी शैतान की बेटी है
ये वह बद किस्मत माँ है
जो बेटों की सेज पर लेटी है
औरत ने जन्म दिया.....'

साहिर ने अपनी माँ के दुःख भरे जीवन का साक्षात् दर्शन किया था। उनका बचपन उनकी नानी के यहाँ बीता। वहाँ के अनुभव को अपनी पुस्तक "मैं साहिर हूँ" में इस प्रकार लिखते हैं-

"हमारी रिहाइश जहाँ थी वहाँ मकान के सामने छोटे छोटे कमरों में कोयला चुनने वालियों और मजदूरी करने वाले लोग रहते थे। फटे-पुराने चीथड़ों में लिपटी उनकी जिन्दगी और उनके तन-मन पर गुरबत के निशान मुझे उन पर ढाए गए जुल्म का हिस्सा नजर आते थे। कोयला चुनने वालियाँ, सारा दिन रेलवे लाईन पर बिखरे हुए कोयले को इकट्ठा करती और दुकानदारों को बेचती। उनका लिबास फटा होता था। जिस्मों पर जा ब जा कोयलों की सियाही फैली हुई थी"

(मैं साहिर हूँ। संपा चन्द्रवर्मा, पृष्ठ-31)

चुनांचे साहिर की शायरी में भारतीय नारियों की दुर्दशा, शोषण और अपमान का संवाद मिलता है। उनकी अनेक कवितायें जैसे चकले, सुबहे नवरोज और सर जमीने यास (दुःख की धरती) आदि में भारत की सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं का सजीव चित्रण मिलता है। चकले में साहिर ने अपने समाज की वास्तविक जीवन शैली पर प्रभावशाली ढंग से

प्रकाश डालने का साहसिक एवं सराहनीय प्रयास किया है तथा समाज के उन व्यक्तियों को चैलेंज किया है जो पूरब के देशों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा करते नहीं थकते हैं। औरतों की दयनीय स्थिति और मजबूरी को दर्शाते हुए साहिर की चंद पंक्तियाँ देखें-

ये पुर पेंच गलियों ये वे ख्वाब बाज़ार
ये गुमनाम राही ये सिक्कों की झंकार
ये इस्मत के सौदे, ये सौदों पे तक़रार
सना ख्वाने तक़दिसे मशरिक कहाँ है?

ये भूखी निगाहें हसीनों की जानिब
ये बढ़ते हुए हाथ सीने की जानिब
लपकते हुए पांव जीने की जानिब
सना ख्वाने तक़दीसे मशरिक कहाँ है?

मदद चाहती है ये हव्वा की बेटी
यशोधरा की हम जिन्स राधा की बेटी
पयम्बर की उम्मत जुलेखा की बेटी
सना ख्वाने तक़दिसे मशरिक कहाँ हैं
ज़रा मुल्क के रहबरों को बुलाओ
ये, गलियों, ये कुचे, ये मंजर दिखाओ
सना ख्वाने तक़दिसे मशरिक को बुलाओ
सना ख्वाने तक़दिसे मशरिक कहाँ हैं'

(तल्लियाँ - पृष्ठ स . 42)

सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं पर आधारित कविता "सुबहे नवरोज़" साहिर की एक महत्वपूर्ण कृति है। साहिर ने इस कविता के माध्यम से दीन हीन, शोषित एवं उपेक्षित व्यक्तियों विशेषकर महिलाओं की दुर्दशा के लिए नहीं है। कविता की चन्द पंक्तियाँ देखें-

'निकली ही बंगले के दर से
इक मुफलिस दहकों की बेटी

जिस्म के दीखते जोड़ दबाती
 अफ़सुर्दा मुरझाई हुई सी
 आँचल से सीने को छुपाती
 मुठी में इक नोट दबाए
 जश्न मनाओ साल ए नव के
 भूखे, ज़र्द, गदागर बच्चे
 कार के पीछे भाग रहे हैं
 पीप भरी आँखें सहलाते
 वक्त से पहले जाग उठे हैं
 सर के फोड़ों को खुजलाते
 वह देखो कुछ और भी निकले
 जश्न मनाओ साले नव के'
 (तल्लियाँ पृष्ठ स . 38)

इस प्रकार हम देखते हैं कि लम्बे समय तक माँ के संघर्ष भरे और दुखमय जीवन ने साहिर को काफी संजीदा, धैर्यवान और विवेकशील बना दिया। साहिर की रचनाओं में प्रगतिशील तत्व एवं सोच की प्रमुखता है। उन्होंने समाज के निम्नतम तबके को बहुत करीब से देखा, परखा और समझा है। उनकी रचनाएँ समाज के शोषित एवं उपेक्षित व्यक्तियों की गाया है। औरतों के सम्मान एवं मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने का सार्थक प्रयास है। साहिर ने अपनी शायरी में औरतों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को यथोचित स्थान दिया है जिसे हम कवित्व की एक नई सोच, विमर्श और बोध कह सकते हैं।

बखान इस प्रकार किया है कि नये साल का जश्न बहुत फीका दिखाई देने लगता है तथा ऐसा महसूस होता है कि ये जश्न गरीब जनता

लोको पायलट (मेल)
 डीज़ल लॉबी, छपरा जं.
 पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मण्डल

अमित कुमार साव

मन भागा जाये आड़े-टेढ़े रस्तों पर
 ले जाये मुझको नगर-नगर, और डगर-डगर
 ले जाये बावरा, कच्ची-पक्की सड़कों पर

और कैसा सुंदर-सा है मेरा ये सफ़र
 जैसे दूर पहाड़ों से
 कोई है बुलाये, लगाए आवाज़ें
 बैठे हुए देखा करूँ मैं
 इस चलती हुई ट्रेन की खिड़की से
 छुक-छुक, तघ-भग, आवाज़ें मुझे प्यारी लगती हैं
 शहरी शोर-शराबों से तो मीठी लगती है

ये सफ़र है जबसे हुआ शुरु
 मन भागा जाये आड़े - टेढ़े रस्तों पर
 ले जाये मुझको नगर-नगर, और डगर-डगर
 ले जाये बावरा, कच्ची-पक्की सड़कों पर
 और कैसा सुंदर-सा है मेरा ये सफ़र

गाती, मस्ती में काम है करती
 यहाँ की ये परियाँ बड़ी सुंदर हैं
 सादी-सीधी ज़िंदगी इनकी
 बड़े ही सुकून से ये जीते है
 पथरीली-पथरीली राहें अच्छी लगती है
 दुनिया की कड़वाहटें भी मीठी लगती है

ये सफ़र है जबसे हुआ शुरु
 मन भागा जाये आड़े-टेढ़े रस्तों पर
 ले जाये मुझको नगर-नगर, और डगर-डगर
 ले जाये बावरा, कच्ची-पक्की सड़कों पर
 और कैसा सुंदर-सा है मेरा ये सफ़र

कनिष्ठ अनुवादक
 म.रे.प्र. (राजभाषा)
 पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

अध्ययन के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी साहित्य में उपाधि प्राप्त विद्वत जनों ने भी अंग्रेजी साहित्य के पठन-पाठन या अन्य विविध सेवा में रहने के बावजूद भी अपने व्यस्त समय में से वक्त निकाल कर हिन्दी साज-साहित्य की उन्नति हेतु अथक प्रयास किए हैं। उनके भगीरथ प्रयास ने इतिहास कायम किया है। लीक से हटकर विपरीत दिशा में कार्य करना कोई बच्चों का खेल नहीं है। लेकिन कुछ गिने चुने साहित्यिक मनीषियों ने अपने हिन्दी लेखक के बल पर एक मिसाल कायम किया है। राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए अपना खून-पसीना एक किया है। इन चिंतनशील, संवेदनशील कलमकारों ने अपने कलमकारी के बल पर हिन्दी साहित्य के विविध विधाओं में कृतियों का रचाव कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इनकी लेखनी ने हिन्दी जगत के भंडार में श्रीवृद्धि की है। इनकी कलाकारी ने आधुनिक हिन्दी जगत में रंग लाया है। एक अलख जगाया है। उपर्युक्त संदर्भ में मैं, अंग्रेजी-हिन्दी से जुड़े महान तपस्वियों की हिन्दी साधना पर एक विहंगम दृष्टि डालना अपना साहित्यिक पुनीत कर्म समझता हूँ। महत्वपूर्ण नामों का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है –

लाला हरदयाल

अमर स्वतंत्रता सेनानी राष्ट्रभक्त लाला हरदयाल ने सन् 1884 ई० में अविभाजित भारत में जन्म लिया। पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से अंग्रेजी में एम. ए. की उपाधि हासिल की थी। सन् 1905 ई० में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लंदन से उच्च शिक्षा ली थी। अमेरिका में गदर, वंदेमातरम जैसे महत्वपूर्ण पत्र निकालकर हिन्दी साहित्य साधना के लिए देश सेवा की। हिन्दी भाषा का सम्मान बढ़ाया। भारतीयों में देश प्रेम की संचेतना जगाई। इनकी पुस्तक "हिट्स फार सेल्फ कल्चर" चर्चित कृति है। इनका सन् 1939 ई० में देहावसान हो गया था।

(प्रतियोगिता दर्पण-फरवरी 2001, पृष्ठ 1223)

विनायक दामोदर सावरकर

28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक से जुड़े ग्राम भागुर में जन्म लेने वाले अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी विनायक दामोदर सावरकर ने भी अंग्रेजी विषय में विशेष अधिकार प्राप्त किया था। आपने हिन्दी अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कलम चलाया। देश प्रेम के लिए विगुल फूँका। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए भगीरथ प्रयास किया। अंडमान और डोंगरी जेल के अनुभव पर यात्रा वर्णन लिखा। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं- मेरा आजीवन कारावास, "कालापानी" 1857 का स्वातंत्र्य समर "भोपाल" गोमाता हिन्दुत्व के पांच प्राण इत्यादि।

(25 मई 2020 दैनिक जागरण)

डॉ० कामिल बुल्के

डॉ० कामिल बुल्के 1909 को बेल्जियम में पैदा हुए। सन् 1982 में भारत आये। अंग्रेजी हिन्दी के उद्भट विद्वान कामिल बुल्के ने रामकथा पर हिन्दी में पी० एच० डी० की। हिन्दी भाषा के विकास के लिए मिसाल कायम किया। "हिन्दी-अंग्रेजी कोश" भी कामिल बुल्के की महत्वपूर्ण देन है।

आप वाल्मिकी के भी भक्त थे। साहित्य व शिक्षा के लिए आपको भारत सरकार ने पद्मभूषण से सम्मानित किया।

आर० टी० एम० ग्रिमिथ

अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दी के विशेष जानकार आर० टी० एम० ग्रिमिथ ने 1870 ई० में बनारस से जुड़े संस्कृत कालेज में प्राचार्य पद पर रहते हुए ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद के साथ-साथ कवि कालिदास द्वारा रचित कुमार संभव जैसी भारतीय कृतियों का अंग्रेजी में भावानुवाद किया।

(दैनिक जागरण, 15 मई -2020)

डॉ० हरिवंश राय बच्चन

प्रतापगढ़ जिला बाबूपट्टी बच्चन जी का गाँव था। इलाहाबाद में जन्मे डॉ० हरिवंश राम बच्चन ने 1939 ई० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से अंग्रेजी

साहित्य में एम० ए० किया। कवि यीट्स पर अपने पी० एच० डी० की। अंग्रेजी विद्वान होने के साथ-साथ हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में विदेश मंत्रालय में कार्य किया। हिन्दी में स्वतंत्र लेखन करते हुए हिन्दी जगत को मधुशाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकान्त संगीत, सत रंगिनी जैसे महत्वपूर्ण काव्य संग्रह दिए। भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर तथा दस द्वार से सोपान तक बच्चन जी की मनोहारी आत्म कथाएं हैं। मैकवेथ का भी आपने हिन्दी अनुवाद किया।

(आरोह पुस्तक भाग-2 से उद्धृत)

रघुवीर सहाय

सन् 1929 में लखनऊ में पैदा हुए रघुवीर सहाय ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम० ए० किया। अंग्रेजी जगत से नाता रखते हुए आपने हिन्दी साहित्य को अपनी कविताओं से समृद्ध किया। "कल्पना", दिनमान, नव भारत टाइम्स जैसे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य की सेवा की थी। आप की लेखनी ने हिन्दी संसार को "सीढ़ियों पर धूप में आत्म हत्या के विरुद्ध, हंसो-हंसों जल्दी हंसो, लोग भूल गए है जैसी महत्वपूर्ण काव्य कृतियां दी है।

(अध्ययन के आधार पर)

सचिदानंद-हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'

7 मार्च 1911 को देवरिया के कसया में जन्में अज्ञेय ने मद्रास विश्वविद्यालय से सन् 1929 ई० में एम० ए० अंग्रेजी में दाखिल लिया था। मद्रास में ही अंग्रेजी के प्रोफेसर हेड ह्यूमस का साथ मिला। लाहौर में अंग्रेजी प्रोफेसर जे० एम० वर्ड एवं प्रोफेसर डेनियल के संपर्क में आए। अंग्रेजी साहित्य के आधार पर आपने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अज्ञेय जी ने हिन्दी संसार को पद्य एवं गद्य विधा में अपनी कुशल लेखनी से एक दिशा एवं दृष्टि दी। "आंगन के पार द्वार", "कितनी नावों में कितनी बार" जैसी अनमोल पद्यकृतियाँ आपके कलम की हैसियत हैं। आपको

1978 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया है। "दिनमान" जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका का संपादन कर भी आपने राष्ट्र भक्ति के साथ हिन्दी जगत को संवारा है।

(हिन्दी गद्य विविधा के आधार पर)

गिरिजा कुमार माथुर

22 अगस्त सन् 1919 को मध्य प्रदेश के गुना जिला स्थित पछार में पैदा हुए गिरिजा कुमार माथुर ने अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। रेडियो, दूरदर्शन पर कार्य करते हुए आपने हिन्दी जगत को धूप के धान, नाश और निर्माण, भीतरी नदी का नाम, कल्पान्तर एवं पृथ्वीकल्प जैसे अनूठे काव्य संग्रह दिए है। आप ने नाटकों का भी सृजन किया है। आप का यह गीत बड़ा लोकप्रिय है- "हम होंगे कामयाब एक दिन".....

नरेन्द्र शर्मा

28 फरवरी सन् 1913 ई० में उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर में जन्में नरेन्द्र शर्मा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम० ए० किया था। आप ने आकाशवाणी की सेवा करते हुए हिन्दी जगत को "मनोकामिनी" व द्रौपदी जैसे महत्वपूर्ण प्रबंध काव्य दिए है। हिन्दी फिल्मों के लिए भी आपने गीत लिखे हैं। फिल्म -'ज्वार-भाटा' एवं 'भाभी की चूड़ियाँ' फिल्मों के गीत बड़े चर्चित है। "ज्योति कलश छलके", गीत शर्मा जी के ही कलम का कमाल है। आपने कालाकांकर में भी रह कर पंत जी के साथ हिन्दी की सेवा की थी।

(अध्ययन के आधार पर)

रघुपति सहाय फिराक

25 अगस्त 1896 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में पैदा हुए रघुपति सहाय अंग्रेजी के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। आप अंग्रेजी विषय के इलाहाबाद विश्वविद्यालय में व्याख्याता थे। आप ने "कलमी नाम" 'फिराक' से शोहरत हासिल की। स्वदेश अखबार, गोरखपुर से कभी प्रकाशित होता था। उसके माध्यम

से आपने हिन्दी साहित्य संसार की सेवा की थी। प्रारम्भ में आप हिन्दी में लिखते थे। इस तथ्य की जानकारी साहित्य सेवी बाबू रविनन्दन सिंह ने मुझे दी है। साहित्यकार दिवंगत भूदेव पाण्डेय जी कभी यह तथ्य उजागिर किया था। आप ने उर्दू सहित अंग्रेजी, हिन्दी को अद्भूत सेवाएं प्रदान की है। आपके "बालपन से जुड़ी हिन्दी सवाइयों कहानियों का रूप अनमोल है।" आपकी "हिंडोला" कविता भी भारतीयता का रेशा-रेशा उभारती है। सन् 1970 ई० में फिराक साहब को उर्दू काव्य "गुले-नग्मा" के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था तथा सन् 1968 में उन्हें साहित्य शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए पद्मभूषण मिला।

(आजकल, मई-1999)

ख्वाजा अहमद अब्बास

7 जून 1914 को पानीपत पंजाब, हरियाणा राज्य में जन्में ख्वाजा अहमद अब्बास ने 1933 को अलीगढ़ विश्वविद्यालय से इंग्लिश साहित्य लेकर बी० ए० किया। 1935-37 में वहीं से एल० एल० बी०। आपने उर्दू हिन्दी एवं अंग्रेजी में बेहतरीन सृजन किया है। आप एक मशहूर फिल्म लेखक निदेशक, निर्माता भी रहे हैं। इस महान रचनाकार ने उर्दू हिन्दी, अंग्रेजी के लिए तिहत्तर पुस्तकें लिखीं। आपने हिन्दी सिनेमा के लिए पटकथाएं भी लिखी हैं।

(पुस्तक-जिदंगी और मौत के दस्तावेज
लेखक- डॉ० कल्याण प्रसाद वर्मा-जयपुर)

अमृत राय

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के पुत्र का जन्म 15 अगस्त 1921 ई० को कानपुर में हुआ। सन् 1942 में आपने प्रयाग विश्वविद्यालय अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० किया। अंग्रेजी साहित्य के इस प्रतिभाशाली व्यक्ति ने 1952 ई० तक हंस का संपादन किया। आपने अपने पिता प्रेमचंद जी के जीवनी पर "कलम का सिपाही" जैसी रोचक कृति लिखकर अमरता प्राप्त की थी। "नागफनी का देश", "हाथी के दांत", लाल धरती

आपके महत्वपूर्ण रिपोर्ट संग्रह हैं। "नागफनी का देश", "गिली मिट्टी", उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत हैं। आदि विद्रोह को सर्वश्रेष्ठ अनुवाद के रूप में केन्द्र सरकार से पुरस्कार प्राप्त है।

(हिन्दी गद्य विधा, पृष्ठ-112)

विष्णु खरे

फरवरी 1940 ई० को मध्य प्रदेश के छिंदवाणा के जन्में विष्णु खरे ने क्रिश्चन कालेज इंदौर से अंग्रेजी भाषा साहित्य के एम० ए० किया। इंदौर समाचार के माध्यम से हिन्दी की सेवा की फिल्मों का इनके लेखन कार्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। महत्वपूर्ण समाचार पत्र दिनमान, नव भारत टाइम्स दि पायनर दैनिक भास्कर हिन्दुस्तान अखबारों के माध्यम से सिनेमा विषय पर प्रभावकारी लेखन द्वारा आपने विशेष ख्याति अर्जित की। आप की महत्वपूर्ण कृतियां हैं- "एक गैर रूमानी समय में, खुद अपनी आँख से, सबकी आवाज पर्दे में तथा पिछला बाकी।" हिन्दी कविता और आलोचना के क्षेत्र में इनका विशेष स्थान है।

(आरोह- भाग-2, पृष्ठ 148)

डॉ० राम विलास शर्मा

डॉ० राम विलास शर्मा अंग्रेजी साहित्य के देदीव्यमान नक्षत्र थे। आगरा कालेज में अंग्रेजी विषय के व्याख्याता थे। अंग्रेजी के पठन-पाठन के साथ-साथ आपने हिन्दी साहित्य की विशेष सेवा की है। आलोचना के क्षेत्र में आप की प्रसिद्धि है। "कवियों के पत्र" आपकी ख्याति प्राप्त रचना है, जिसमें हिन्दी के महान साहित्यकारों जुड़े पत्र हैं, जिनमें सुभद्रा कुमारी चौहान, नरेन्द्र शर्मा, शिव मंगल सिंह 'सुमन', गिरिजा कुमार माथुर इत्यादि से जुड़े पत्रों का उल्लेख है। आपने निराला की साहित्य साधना पर भी विशेष कार्य किया।

डॉ० कुबेर नाथ राय

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद स्थित ग्राम- मतसा में 28 मार्च 1925 को कुबेर नाथ राय का जन्म हुआ

था। आपने सन् 1958 ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए० किया। नलवाड़ी कालेज (असम) में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। सन् 1985 में गाजीपुर आकर आप सहजानंद महाविद्यालय के प्राचार्य हुए। अंग्रेजी पठन-पाठन के साथ, आपने ललित निबंधकार के रूप में हिन्दी जगत की सेवा की। इनकी महत्वपूर्ण गद्यकृति थी- प्रिया नीलकंठी। इस पुस्तक का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ से 1969 में हुआ। इसके प्रकाशित होते ही आप ललित निबंधकार के रूप में स्थापित हो गए। "कामधेनु" पर आपको मूर्ति देवी पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपने धर्म युग, "माधुरी" कादम्बिनी जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लिखकर हिन्दी जगत की अधिकाधिक सेवा की। (सृजन धर्मी गाजीपुर, लेखक-रामावतार, पृष्ठ-61-62)

डॉ० पी० एन० सिंह

उ० प्र० के गाजीपुर जिला के गाँव वासुदेवपुर में एक जुलाई 1942 को पैदा हुए। परमानंद सिंह ने अंग्रेजी साहित्य में कोलकता विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। वीर विक्रम देव कालेज अगरतला (त्रिपुरा) के अंग्रेजी अफायक रहे। सन् 1971 ई० गाजीपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्रवक्ता हो गए। अंग्रेजी साहित्य के पठन-पाठन के साथ आपने हिन्दी की भी साहित्य साधना की है। डॉ० सिंह ने "समकालीन सोच" जैसे वैचारिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ कर आधुनिक हिन्दी जगत को मर्यादित किया है। "गांधी और बर्धा", "नायपाल का भारत", "अम्बेडकर चिंतन और गांधी", "अम्बेडकर और लोहिया" इनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। इनकी हिन्दी में अन्य पुस्तकें हैं- राम विलास शर्मा और उनकी हिन्दी जाति, नामवर संदर्भ और विमर्श, संस्कृति का विवेक विशेष, मेरी दुनिया के लोग, कुबेर नाथ राय: साहित्य सांस्कृतिक बिन्दु।

(सृजन धर्मी-गाजीपुर, रामावतार, पृष्ठ - 32-39)

डॉ० जितेन्द्र मिश्र

15 मार्च 1947 ई० को वाराणसी के ईश्वरगंगी मुहल्ले में विद्वान साहित्यकार पंडित पारसनाथ मिश्र, "सेवक" के घर श्रीमती राजकुमारी जी की गोद में पैदा हुए कुशल संपादक, लेखक एवं कवि ने अंग्रेजी तथा हिन्दी साहित्य में एम० ए० किया। दयानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी में हिन्दी साहित्य के अध्यक्ष पद से नाता जोड़ा। अंत में "सोच विचार" जैसी भारतीय स्तर की पत्रिका का फरवरी 2009 ई० से प्रकाशन प्रारम्भ हिन्दी जगत को अपनी अनमोल सेवा दे रहे हैं। भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य, काव्यशास्त्र साहित्य और समीक्षा हिन्दी भाषा का स्वरूप, त्रिकुट राम जीवन, गीता भावार्थ तथा संस्कृति और सभ्यता वैचारिक निबंध संग्रह जैसी कृतियों के माध्यम से विद्वान मिश्र जी ने हिन्दी साहित्य जगत को समृद्ध किया है। आपको उत्तर प्रदेश प्रशासन ने साहित्य सेवा के लिए अलंकृत किया है। (संस्कृति एवं सभ्यता पुस्तक से)

डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र

1 मई 1949 को बिहार राज्य के समस्तीपुर के देवघर गाँव में जन्में डॉ० बुद्धि नाथ मिश्र बी० एच० यू० ने 1968 में अंग्रेजी और सन् 1977 में गोरखपुर से हिन्दी में एम० ए० किया। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1982 में पी० एच० डी० किया। आप भारत प्राकृतिक गैस आयोग (तेल भवन) देहरादून में हिन्दी राजभाषा निदेशक पद से अवकाश प्राप्त कर हिन्दी की नवगीत विधा को जीवंत किया है। "शिखरिणी" आप की नवगीत विधा भी महत्वपूर्ण कृति है। अन्य कृतियाँ हैं- ऋतुराज एक पल का। इनकी सशक्त लेखनी से भारतीय नवगीत विधा को विशेष गति मिली है। (शिखरिणी पुस्तक से)

डॉ० नीरजा माधव

विदुषी कवयित्री, लेखिका एवं उपन्यासकार डॉ० नीरजा माधव का जन्म उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिला स्थित गांव कोतवालपुर सरेयू में हुआ है। आपने

काशी प्रतिबिंब

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० पी० एच० डी० किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की सेवा करते हुए आप गत वर्ष उपनिदेशक पद से मुक्त होकर प्रसार भारती से नाता तोड़ लिया है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के महत्वपूर्ण पदों पर देश की सेवा करते हुए आपने आधुनिक हिन्दी जगत को भी अपनी अनूठी रचनाएं दी हैं। तिब्बती शरणार्थियों पर आप की लेखनी ने अपनी अनुपमशैली में गद्यात्मक कृति दी है

“गंशोजम्पा तथा देनपा तिब्बत की डायरी”। आपके ललित निबंध संग्रह है- बाया पाण्डेयपुर चौराहा, चैत चित मन महुआ, कहानी संग्रह है- चिटके आकाश का सूरज, अभी ठहरो अंधी सदी, आदिम गंध। आज भी आप पत्र पत्रिकाओं में ललित निबंध लेख, तथा कविताएं लिखने में अपना समय देती है। इस महामारी में आपका तरोताजा उपन्यास आया है- कोरोना।

(इनकी कृति से)

डॉ० नलिनी श्याम कामिल

अंग्रेजी साहित्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से एम० ए० पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त किए डॉ० नलिनी श्याम कामिल महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के अंग्रेजी भाषा साहित्य के विभागाध्यक्ष हैं। आप अंग्रेजी साहित्य के व्यक्ति होते हुए भी राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनारों के माध्यम से हिन्दी साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों मोहन राकेश के नाटकों पर विशेष गोष्ठियां आयोजित किया करते हैं। इस आधार पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी जगत की भी खास सेवा कर रहे हैं। भारतीय मूल्यों के प्रति संचेतना जगाने में भी आपके व्याख्यान प्रभावकारी हैं। तुलसी साहित्य प्रसाद साहित्य आपकी पकड़ वंदनीय है। भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकारों के भारतीय मूल्यों को उजागिर करने में भी अपनी लेखनी चला रहे हैं। अडिगा पर आपका कार्य प्रशंसनीय है। अतः उपर्युक्त आधार पर कहा जा

सकता है कि अंग्रेजी साहित्य से जुड़े विद्वानों के हृदय में भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास के प्रति मोह है। आप सब का अन्तः मन चाहता है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त करे क्योंकि हिन्दी ही हमारे भारत माँ के माथे की बिंदी है। इसी से राष्ट्रीय एकता अखण्डता का परचम लहराएगा। भारतीय सभ्यता-संस्कृति विश्व में बलवती होगी। इनके अभिनव प्रयास से ही हिन्दी की पवित्र नदी के रसधार का कल-कल, छल-छल निनाद विश्व में गुंजित वंदित होगा।

एन. 6-2-एल-11

इंदिरा नगर, सुन्दरपुर,

वाराणसी-221005 (उ० प्र०)



सभी भारतीयों का यह
परम कर्तव्य है
कि वे हिंदी को
अपनाएँ ताकि हम सब
एक होकर समन्वित
संस्कृति का
विकास कर सकें।

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत 1 दिसंबर/2022 से 30 नवंबर/2023 तक जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है यह एक युगांतकारी परिवर्तन का शंखनाद है। आने वाले दिनों में दुनिया इसके सकारात्मक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिणाम देखेगी। जी-20 समिति के अध्यक्ष के रूप में भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को केंद्रीय विषय के रूप में घोषित किया है। इसका महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि इसे जी-२० के निर्धारित 'लोगों' में स्थान दिया गया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सनातन धर्म का मूल संस्कार और मनीषा है। यह महाउपनिषद् सहित कई ग्रंथ से लिपिबद्ध है। इसका अर्थ 'संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार' है। सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। परिवार के सदस्य भावनात्मक रूप से आपस में एक-दूसरे के साथ जुड़े होते हैं। और एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी और सहायक होते हैं। इसी पारिवारिक भावना को वैश्विक स्तर पर लागू करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत शुरू से ही शांति का अग्रदूत रहा है। आज दुनिया के कई देश संगठित हिंसा का दंश झेल रहे हैं। इस प्रकार की हिंसा से मानवता की रक्षा आज समय की मांग है। इसकी पूर्ति के लिए भारत जी-20 के मंच से वैश्विक समरसता को बढ़ाने में सकारात्मक भूमिका अदा करने जा रहा है।

जी-20 समूह की अध्यक्षता एक वर्ष के लिए एजेंडा चलाती है और शिखर सम्मेलन की मेजबानी करती है। भारत ने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को अपनी भावी योजनाओं का आधार बनाते हुए एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का एजेंडा लेकर परस्पर सहयोग बढ़ाने की संकल्पना के साथ एक वर्ष की अपनी अध्यक्षता के लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

इस उद्देश्य को साकार करने के लिए भारत जी-20 के दोनों समानांतर आर्थिक और सामाजिक मोर्चों पर लगातार वचनबद्धता के साथ कार्यरत है। अपनी अध्यक्षता के विषय को भारत ने प्राचीन सभ्यता और संस्कृति से जोड़ते हुए पृथ्वी पर उपस्थित मानव, पशु, पौधे एवं सूक्ष्मजीव और धरती को व्यापक ब्रह्मांड में उनके परस्पर संबंधों से जोड़ने का प्रयास किया है। भारत का मानना है कि इस ब्रह्मांड में उपस्थित सभी जड़ और चेतन वस्तुओं की सुरक्षा मानव जीवन के लिए आवश्यक है। इस विषय को चुनने का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत जीवन-शैली के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास, टिकाऊ और उचित विकल्पों को चुनने व उस दिशा में चिंतन और शोध के लिए प्रतिबद्धता है। जी-20 की अध्यक्षता का महत्व और बढ़ जाता है, जब पिछले वर्ष से चल रहे रुस-यूक्रेन युद्ध, कोरोना महामारी की विभीषिका और व्यापक वैश्विक आर्थिक अस्थिरता के प्रभावों से बचने के लिए पूरा विश्व भारत की ओर इस आशा के साथ देख रहा है कि इन समस्याओं का स्थायी समाधान भारत के सुझाए रास्ते से निकलेगा। भारत का यही मानना है कि यह युग युद्ध के द्वारा समस्याओं का समाधान निकालने का नहीं है। भारत इस मंच के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रत्येक नागरिक को वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना आत्मसात् करने के लिए प्रेरित करेगा। युद्ध के बजाय शांति के मार्ग पर चलाने की महत्ता और प्रभाव से दुनिया को अवगत कराएगा।

वरिष्ठ अनुवादक

म.रे.प्र. (राजभाषा)

पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

रानी आज अपने घर में सबसे पहले उठ चुकी थी, और उठते ही सबसे पहले उसने अपनी रंग-बिरंगी पतंग, जो उसके कमरे में रखी कुर्सी पर पड़ी थी, को परखा है। अधखुले नैन, आँखों में नींद लिये वो अपने बगल में सोई हुई माँ को जगाती है। उसके छोटे नन्हें पांव और कम कद अभी भी बाथरूम के स्वीच तक नहीं पहुँचते थे। उसके बाहर निकलते ही माँ ने वापस सोने को बोला पर रानी की आँखों में बस नीले आसमान में उड़ती उसकी पतंग नजर आ रही थी। माँ ने खिड़की से पर्दा हटाकर रानी को बाहर का अंधेरा दिखाते हुये कहा “इसमें तुम्हारी पतंग के रंग को कोई नहीं देख पायेगा। अभी सो जाओ जब उजाला होगा तो चली जाना।”

रानी ने अपनी माँ की बात मानकर मम्मी पापा के बीच सोने चली गयी पर उसके आँखों में खिड़की से आती हुई पहली किरण का इंतजार था। लेटने पर उसके पापा खिड़की के बीच आ रहे थे तो वो उठ कर बैठ गयी। माँ ने ये देखकर उसको सोने की हिदायत दी। वो मन मारकर लेट तो गयी पर अपना सर उसने अपने पापा के कंधे पर रख लिया, जिससे खिड़की का थोड़ा हिस्सा उसको नजर आने लगा। जागती हुई किरण के साथ उसकी आँखों बंद हुई और वो बादलों के बीच अपने पतंग की डोर पकड़े भाग रही थी। उसकी नारंगी पतंग जिसमें आसमानी रंग के टुकड़े चिपके हुये थे, अपनी हरी पूँछ के साथ इतराते हुये आसमान में लहरा रही थी। उसकी आँख खुली तो बाहर उजाला हो चुका था। खिड़की से पर्दा हट चुका था और जनवरी की भीनी सी धूप और मनचाही शीत रानी के गालो को छू जा रही थी। ये देख वो धबरा कर हॉल की ओर अपनी माँ को ढूँढ़ते हुये भागी। किचन में उसकी माँ गरम-गरम पूड़ियाँ तल रही थी, और

दूसरी गैस पर चाय और ईलायची की सोंधी खुशबू से पूरे घर को महका रही थी।

उसने माँ के पल्लू को खींचते हुये अपने मधुर आवाज में बोला “माँ मुझे देर हो गयी जल्दी से मेरी पतंग में डोर लगाओ मुझे जाना है।” माँ ने कर हस उसको बताया कि अभी उसके दोस्त नहीं आये हैं और काफी वक्त है वो नहाकर तैयार हो जाये फिर नास्ता कर पतंग उड़ाने जा सकती है। झट से नहाकर उसने अपने पसंदीदा पीले रंग की फ्रॉक पहनी और डायनिंग टेबल पर जा बैठी। पापा अखबार पढ़ रहे थे और उनको देख उसको अपने पतंग की डोर याद आ गयी। अपने नन्हें पांव से भागते हुये अपनी पतंग को लाकर उसने अपने पापा के सामने रख दिया। पापा का कुर्ता खिंच उसने अपने नीली बड़ी आँखों से उनकी तरफ आशा से देखा। पापा ने मुस्कुराकर उसके अपनी गोद में बैठा लिया और डोर को बांधना शुरू कर दिया। हर एक छेद के साथ रानी की दिल की धड़कन बढ़ रही थी, कि कहीं उसकी पतंग फट ना जाय। पतंग के बंध जाने के साथ ही नास्ता टेबल पर आ गया था। पापा के हाथों से गरम-गरम पूड़ियाँ खाना रानी को बेहद पसंद था, पर आज उसके अंदर का धैर्य चंचलता का रूप ले रहा था। मूकूल, सोनू, मोनू और चिक्की, चारो अपनी-अपनी पतंग लेकर रानी के घर के दरवाजे से आवाज लगा रहे थे। पापा के हाथों का आता हुआ कौर रानी के निगाहों से धुंधला चूका था। पतंग लेकर वो बाहर भाग गयी। पतंग उड़ाने का पूरा कार्यक्रम चंदू के घर था क्योंकि उसका बड़ा भाई मूकुंद ही एक ऐसा सा व्यक्ति था जिसे पतंग उड़ाना आता था। बाहर निकल जब रानी ने आसमान को देखा तो आज रोजाना से ज्यादा चिड़िया दिख रही थी। इनके आकार और रंग भिन्न-

भिन्न थे। कुछ देर बाद रानी को समझ आया की ये तो पतंगे थी। पिछले सात सालों में, रानी की पतंगो वाली यह पहली खिचड़ी थी। ये रंगीन आसमान उसने पहले कभी नहीं देखा था। चंदू की छत की एक तरफ टेबल पर शरबत और गुझिया रखी थी, और बीच में उसका भाई मुकुंद पतंग उड़ा रहा था, जो रानी को नजर तक नहीं आ रही थी। बाकियों ने एक दूसरे की मदद से अपनी-अपनी पतंग को छोड़ दिया पर सभी एक दो पल में नीचे आ गिरी। ये पूरा नजारा बगल की छत वाली लड़कियों का समूह देख रहा था। वो छत फांद कर इस छत पर आ गयी और सारे बच्चों की पतंग उड़ाने में मदद करने लगी। रानी की पतंग की डोर शमा के हाथों में गयी। उसकी लाली भरी मुस्कान और लहराते बालों से रानी को प्यार हो गया था, एक पल के लिये उसे अपनी पतंग भी फिकी लगने लगी थी। पर कुछ ही देर में उसके सपने की तरह उसके नारंगी पतंग आसमान में उससे दूर कहीं गोते खा रही थी। ये दृश्य देख रानी की आँखें बड़ी हो गयी और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वो चहचहाते हुये वहीं खड़ी हो ताली बजाने लगी। उसकी आँखें बस अपनी पतंग का पिछा कर रही थी कि तभी पतंग और डोर का साथ टूटता नजर आया। उसकी पतंग डोर से आजाद हवा संग बहते हुये गिर रही थी। रानी के आँखों में आँसू भर आये थे जब शमा ने उसका हाँथ पकड़ उसको पतंग की ओर ले जाना शुरू किया।

सड़क पर उतर रानी ने भांप लिया था कि उसकी पतंग बस कुछ दूर गिरने वाली है और शमा के साथ उसने दौड़ लगायी। दौड़ते-दौड़ते उसके अंदर के सारी उदासी खत्म हो चुकी थी, इस गति में एक आनंद आ रहा था। शमा की मुस्कान उसको और उत्तेजित कर रही थी। ठीक उसी पल उसकी पतंग

तेजी से गिरती नजर आयी, शमा और पतंग की बीच बस कुछ पलों का फासला था। शमा ने एक छलांग लगयी और पतंग की डोर से पतंग पकड़ ली। रानी और शमा दोनो ने अपने बचपन का भरपुर आनन्द लिया था।

वरिष्ठ लिपिक
मं.रे.प्र. (कार्मिक)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

प्रयास

मित्रों, हम भी अपने जीवन में ऐसी परिस्थितियों से दो-चार होते रहते हैं। कई बार किसी कार्य को करने के पूर्व या किसी समस्या के सामने आने पर उसका निराकरण करने के पूर्व ही हमारा आत्मविश्वास डगमगा जाता है और हम प्रयास किये बिना ही हार मान लेते हैं। कई बार हम एक-दो प्रयास में असफलता मिलने पर आगे प्रयास करना छोड़ देते हैं। जबकि हो सकता है कि कुछ प्रयास और करने पर कार्य पूर्ण हो जाता या समस्या का समाधान हो जाता।

यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो बार-बार असफल होने पर भी तब तक

प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिये, जब तक सफलता नहीं मिल जाती। क्या पता, जिस प्रयास को करने के पूर्व हम हाथ खींच ले, वही हमारा अंतिम प्रयास हो और उसमें हमें कामयाबी प्राप्त हो जाये।

एक दिन विजय शंकर के पिताजी अचानक बीमार पड़ गए, वह तुरंत पड़ोस के एक डॉक्टर को उनके उपचार हेतु घर बुला कर लाया। डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के पश्चात व्यंग्य स्वरुप बोला-अरे भाई! बुढ़ापे का कोई ईलाज नहीं होता। नब्बे पार कर चुके हैं, अब बस सेवा कीजिये।

विजय शंकर- डाक्टर साहब! कोई तो तरीका होगा, विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है।

डॉक्टर - विजय शंकर बाबू! मैं अपनी तरफ से दुआ ही कर सकता हूँ, बस आप इन्हें खुश रखिये। इससे बेहतर संसार में और कोई दवा नहीं है, और इन्हें लिक्विड पिलाते रहिये जो इन्हें पसंद है। डाक्टर अपना बैग सम्हालते हुए मुस्कुराया और बाहर निकल गया।

विजय शंकर पिता को लेकर बहुत चिंतित था, उसे लगता ही नहीं था कि पिता के बिना भी कोई जीवन हो सकता है। माँ के जाने के बाद अब एकमात्र आशीर्वाद उन्ही का बचा था। उसे अपने बचपन और जवानी के सारे दिन याद आ रहे थे, कैसे मेरे बाबूजी नौकरी से छुट्टी लेकर जब घर आते थे तो हाँथ में कुछ न कुछ जरूर होता था। मेरे साथ-साथ परिवार के समस्त बच्चों के लिए कम से कम पारले-जी वाली बिस्किट की पैकेट जरूर लेकर आया करते थे।

एक दिन बाहर हलकी-हलकी बारिश हो रही थी, ऐसा लगता था जैसे आसमान भी रो रहा हो। विजय शंकर ने स्वयं को किसी तरह समेटा और पत्नी से बोला - उर्मिला! आज सब के लिए पकौड़े व हरी चटनी बनाओ, मैं बाहर से जलेबी लेकर आता हूँ। और हाँ! बाबूजी की पसंद का दो कप चाय जरूर बना देना। पत्नी ने बेसन पहले से ही भिगो रखी थी, वह भी अपने

काम में लग गई। कुछ ही देर में रसोई घर से पकौड़ों की खुशबू आने लगी। विजय शंकर भी बाजार से जलेबियाँ लेकर आ गया, वह जलेबी रसोईघर में रख कर बाबू जी के पास जाकर बैठ गया। उनका हाथ अपने हाथ में लिया और उन्हें निहारते हुए बोला बाबू जी! आज आपकी पसंद की चीज लाया हूँ, थोड़ी जलेबी खायेंगे? पिता ने आँखें झपकाई और हल्का सा मुस्कुरा दिए वह अस्फुट आवाज में बोले - पकौड़े बन रहे हैं क्या? हाँ बाबूजी साथ में चाय भी! आपकी पसंद की हर चीज अब मेरी भी पसंद है। अरे! उर्मिला जरा पकौड़े के साथ साथ जलेबी तो लाओ। विजय शंकर ने आवाज लगाई, लीजिये बाबूजी एक और (उसने पकौड़ा हाथ में देते हुए कहा) बस....अब पूरा हो गया, पेट भर गया, जरा सी जलेबी दे, पकौड़ा तो ठंढा हो चला है? पिता बोले। विजय शंकर ने जलेबी का एक टुकड़ा हाथ में लेकर मुँह में डाल दिया, बाबूजी उसे प्यार से देखते रहे। विजय! सदा खुश रहो बेटा, मेरा दाना पानी अब पूरा हुआ, पिता बोले।

विजयशंकर- बाबूजी! आपको तो सेंचुरी लगानी है, आप तो मेरे तेंदुलकर हो, आँखों में आंसू बहने लगे थे। वह मुस्कुराए और बोले - तेरी माँ भी तो पेवेलियन में इंतज़ार कर रही है बेटा! अगला मैच खेलना है, तेरे चार बेटों में से किसी एक के कोख से तुम्हारा पोता बनकर आऊंगा तब खूब खाऊंगा बेटा। इतना कहकर वे अपने इकलौते विजय को देखते रहे। विजय शंकर ने प्लेट उठाकर एक तरफ रख दी और चाय का कप आगे रख दिया। मगर पिता उसे लगातार देखे जा रहे थे, आँख भी नहीं झपक रही थी, और न ही चाय की कप को उठा रहे थे।

काशी प्रतिबिंब

विजय शंकर समझ गया कि यात्रा पूर्ण हुई, तभी उसे ख्याल आया, बाबूजी कहा करते थे- "श्राद्ध खाने नहीं आऊंगा कौआ बनकर, जो खिलाना है अभी खिला दे"। विजय शंकर के आँखों में अश्रु थे, किन्तु उसकी अंतरात्मा ढाढस बढ़ा रही थी कि रो मत! संसार की इस सच्चाई को स्वीकार कर, तूने अपने माँ – बाप का निःस्वार्थ मन से सेवा की है अब तुम्हें इसका कोई मलाल नहीं होना चाहिए।

इसलिए माँ बाप का सम्मान करें और उन्हें जीते जी खुश रखें, मरणोपरांत आडम्बर की कोई आवश्यकता नहीं है।

**सी.से.इंजी. (इले.)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी**

आज के शिक्षक

अब के शिक्षक हुये समीक्षक
बस राजनीत दिन रात करें।
निज कर्तव्य से हो विमुख
बस कूटनीत की बात करें॥

भुल के सब प्राचीन पद्धति
व भुल के सब शिक्षा नीत।
गुरु शिष्य को ध्यान से देखो
पान दुकान पे करें राजनीत॥

हुआ चरित्र इनका विचित्र
शिक्षा भी हो गयी चलचित्र।
कोई किसी से कम नहीं है
चाहे हों बड़े या शिक्षामित्र॥

छुट्टी है ज्यादा काम है कम
फिर भी नहीं है कोई गम।
बैठ स्कूलों में लड़ावें गप

कहें देश सुधारते केवल हम॥

चली गयी शिक्षा से संस्कृति
चला गया शिष्यों से संस्कार।
जो गोविन्द से बढ़ के रहे गुरु
अब उनका देखो व्यवहार॥

होंगें शिष्य अर्जुन दुर्योधन
जब गुरु रहेंगें द्रोण समान।
जब गुरु नहीं है वशिष्ठ समान
तब कैसे शिष्य हों राम समान॥

यदि शिक्षक दे थोड़ा ध्यान
तो शिष्य बन सकते बड़े महान।
पहले गुरु बने कुम्हार के जैसा
तो शिष्य हो जायेंगे कुम्भ समान॥

कैसे सुधारेंगे ये शिक्षक
अब देश के भविष्य का चरित्र।
जब गाँव के हारे हुये प्रधान सा
घुम रहें सब शिक्षा मित्र॥

विकसित होगा देश तभी
जब सही हो शिक्षक शिक्षा।
नहीं तो हर जगहों पे शिक्षित
करेंगे चोरी या माँगेंगे भिक्षा॥

यदि शिक्षक हों निज स्वभाव में
यदि शिक्षक हो निज प्रभाव में।
तो ये मुन्ना का दावा है हरदम
जिये न शिक्षक किसी अभाव में॥

**मुनीन्द्र कुमार पाण्डेय 'मुन्ना'
साहित्यकार**

मनोज कुमार श्रीवास्तव

‘सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा’ अपनी उत्कृष्ट सभ्यता अपनी बेजोड़ संस्कृति की बदौलत विश्व में अपनी पहचान बनाने वाले हम सब उस ‘हिन्दुस्तान’ के निवासी हैं, जिसकी सीमाएँ अफगानिस्तान और बांग्लादेश तक विस्तृत थी और जिसकी यशगाथा विश्व में गायी जाती थी।

हमारे मनीषियों और ऋषियों द्वारा सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और नैतिक मूल्यों के आधार पर निर्मित हमारी व्यवस्थाएं हमें एकता के सूत्र में बाँधती थी और परस्पर भाईचारा और प्रेम तथा ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की भावना से हमें ओत-प्रोत रखती थी।

हमारे वर्ण व्यवस्था ही हमारे संगठन का आधार थी, जो वैदिक काल से ही कर्म के आधार पर आधारित थी, जो चार थी - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जब बालक गुरुकुल में जाता था तो बालक के गुण व स्वभाव को परख कर उसके कर्म के आधार पर उसके वर्ण का निर्धारण होता था और गुरुकुल में गुरु बालक के वर्ण का निर्धारण करते थे। अर्थात् एक ब्राह्मण के घर शूद्र व शूद्र के घर ब्राह्मण का जन्म सम्भव था। ‘गीता’ में भी अपने-अपने वर्णों के अनुसार अपने-अपने कर्मों को पूरा करते हुये आदर्श जीवन की प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं। मैनयर विल्सन ने लिखा है- “वर्ण व्यवस्था मनुष्य को त्याग का पाठ पढ़ाती है, दुराचार से उसे रोकती है, दरिद्रता को दूर करती है तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करती है।” इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है- “वर्ण व्यवस्था में कुछ न कुछ विशिष्ट गुण हैं जिससे वह उत्तर से दक्षिण व पूरब से पश्चिम तक सहस्त्रों से विद्यमान है। उस समय 980 ई० में अफगानिस्तान पर राजा जयपाल शासक थे और वहाँ के

बहुसंख्यक हिंदू थे। वर्ण व्यवस्था में आवश्यक गुण न होता तो अब तक उसका पतन हो जाता। वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था से प्राचीन है तथा वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप लेने पर ही जाति व्यवस्था का जन्म हुआ। वर्ण व्यवस्था वैदिक काल में उदित हो चुकी थी जबकि जाति व्यवस्था का जन्म उत्तर वैदिक काल में हुआ।”

वर्ण की अपेक्षा जाति व्यवस्था एक संकीर्ण धारणा है। वर्ण कर्म पर आधारित है जाति जन्म पर आधारित है। वर्णों की तुलना में जाति व्यवस्था में अधिक जटिलता तथा छुआछूत, ऊँच-नीच की भावनाएँ पायी जाती हैं। वर्ण व्यवस्था में समान पाये जाते हैं। जबकि जाति व्यवस्था में छुआछूत की भावनाएँ पायी जाती हैं।

पांचवीं तथा छठी सदी हर्षवर्धन के मृत्यु के पश्चात् सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत की राजनैतिक कमजोरियाँ चरम सीमा पर पहुँच गयी, भिन्न-भिन्न, छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इसी युग में प्राचीन सामाजिक व्यवस्था खत्म होने लगा। चार मूल वर्णों के जगहों पर हिन्दू समाज जातियों व उपजातियों में प्रादुर्भाव होने लगा। वहीं से धीरे-धीरे हमारा समाज व देश कमजोर होने लगा। विभिन्न प्रकार की कुरीतियों व आडम्बर का प्रचलन शुरू होने लगा। आपस में विभिन्न राज्यों में कलह, संघर्ष होने लगा। उसी कमजोरी का फायदा विदेशियों ने उठाया और हमारे देश पर कब्जा करने व एक सम्पन्न देश को लूटने व यहाँ के लोगों का शोषण, हत्या, धर्म परिवर्तन जैसी कार्यवाही होने लगी। जो कई शताब्दियों तक चलता रहा। उसी कमजोरी का फायदा अंग्रेजों ने भी उठाया व हमारे देश को गुलाम बनाया। वे हमारे देश को शासन की आड़ में लूटते रहे। यह सब कई शताब्दियों तक चलता

रहा।

उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारत में नवजागरण युग आरम्भ हुआ। इस नवजागरण आन्दोलन में राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द जैसे सुधारकों व मनीषियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों तथा धार्मिक पाखण्डों पर तीखा प्रहार कर समाज सुधार आन्दोलन का बीड़ा उठाया व राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज बना कर और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना 1875 में कर विभिन्न कुरीतियों जैसे धार्मिक आडम्बर, मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, ऊँच-नीच आदि कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया। ज्योतिबा फूले ने भी 1873 में पूना में सत्यशोधक समाज की स्थापना कर सुधार व जाति व्यवस्था महत्व को कम करने का कार्य किया। विश्व बन्धुत्व के भावना करने हेतु डा० ऐनी बेसेन्ट ने सन् 1886 भारत में आकर थियोसोफिकल सोसाइटी संगठन की स्थापना की।

लेकिन दुःखद यह है की आज भी इसके बावजूद हम 21वीं सदी में पहुँच गये, धरती से लेकर आकाश तक, नदी से लेकर समुद्र तक हम तकनीकी के विकास से अपनी विजय पताका फहरा रहे हैं, विज्ञान के क्षेत्र में हमने आशातीत उपलब्धियाँ हासिल की है, डिजिटल इंडिया के मार्ग पर हम प्रशस्त हैं और विश्व पटल पर भारत अपनी पहचान बना चुका है, उसने आज हमारी सामाजिक व्यवस्था को पूरी तरह से दूषित बना दिया है।

वर्तमान जाति व्यवस्था से राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था भी प्रदूषित होती जा रही है। आज स्थिति यह है कि आम चुनाव के टिकट वितरण में भी कार्य की अपेक्षा जाति के आधार पर पार्टी द्वारा टिकट वितरण हो रहा है। अधिकांश मतदाता भी जाति के आधार

पर अपना मत दे रहे हैं। इससे अच्छे (योग्य व ईमानदार) जनप्रतिनिधियों का राजनीति में अभाव होता जा रहा है। इसी का लाभ उठाकर बहुत सारे अपराधिक छवि वाले व्यक्ति भी विधान सभा व लोक सभा में जनता द्वारा चुनकर पहुँचने लगे हैं। आज सरकार के कार्यों की समीक्षा भी जाति के दृष्टिकोण से किया जा रहा है। अधिकांशतः मतदाता भी कार्य की अपेक्षा जाति के आधार पर बटते जा रहे हैं। जो स्वस्थ समाज व मजबूत देश के लिये खतरा होता जा रहा है। मुख्य बात यह है कि आज हमारे यहाँ उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के लोगो के बीच आपसी प्रेमभाव लेशमात्र नहीं है। उच्च वर्ग के सुशिक्षित जन, निम्न वर्ग के लोगो के किसी भी दुःख से दुःखी नहीं होते और निम्न वर्गों के लोग उच्च वर्ग के किसी भी सुख से सुखी नहीं होते। आपसी प्रेमभाव का यही अभाव फिलहाल देश की उन्नति में मुख्य रूप से बाधक है। इसी के अभाव में दोनों वर्गों के बीच खाई और बढ़ती जा रही है। विश्व में जिस भी समाज की उन्नति हुई है उससे समाज में दोनों वर्ग किसी न किसी वर्ग में समकक्ष रहे हैं। उनमें मिलना-जुलना रहा और वे एक दूसरे के प्रति सहृदय रहे हैं। जब तब ऐसा नहीं हुआ तब तक दोनों में दूरी बनी रही व उन्नति हुई ही नहीं। जब दोनों वर्गों के बीच समाजस्य स्थापित हुआ, उसी दिन से उन्नति का रास्ता खुला। रोम, एथेन्स, इंग्लैण्ड एवं अमेरिका इस बात के उदाहरण हैं। एथेन्स और स्पार्टा दो प्रतिद्वन्दी नगर थे, एथेन्स में सभी बराबर थे। उसी कारण नई सभ्यता अवतरित हुई, जिसके प्रभाव से आज जो यूरोप इतना प्रभावशाली बना है उसकी जड़े एथेन्स में ही थीं। वहीं स्पार्टा (नगर) में एक जाति स्वामी थी, दूसरी दास स्पार्टा की अवनति हुई व उसकी बरबादी हो गई। फ्रांस में वर्ग भेद के कारण सन् 1789 में भीषण तबाही मची थी लेकिन

काशी प्रतिबिंब

बाद में वर्ग भेद कम होने व आपसी समझदारी से पुनः विकास हुआ। विश्व में जाति वर्ग की आपसी सामजस्य नहीं होने के कारण यदि किसी देश की सबसे अधिक बर्बादी हुई और अभी भी हो रही है, वह भारतवर्ष है। इस प्रकार से जाति कैसर के बीमारी के तरह से फैलता जा रहा है, जो समाज को खोखला कर रहा है। इसलिए इसका उन्मूलन आवश्यक है। भारत के इतिहास को देखते हुये हमें सीख लेना चाहिए व जाति व्यवस्था को खत्म करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को सकल्प लेना होगा व साहस दिखाना होगा चाहे वह जिस भी जाति के हों। डा० अंबेडकर ने भी जाति विहीन प्रबुद्ध भारत का सपना देखा था।

म० नं० 4/11 रेल बिहार फेज -२ राष्ट्रीय नगर
गोरखपुर

भाषा की सरलता, सहजता
और शालीनता
अभिव्यक्ति को
सार्थकता प्रदान करती है।
हिंदी ने इन पहलुओं को
खूबसूरती से
समाहित किया है।

- नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

संस्कृति युद्ध

सुशील कुमार

डूब गया संस्कृति सूर्य
झुका पताका समाज का
जीत गया वर्तमान जो
हार गया संस्कृति भूत
सम्मान सेनापति घायल
कर अपने प्राण न्यौछावर
विदेशी संस्कृति का परचम
लहराया आर्यावत में
आध्यात्म की क्रूर हत्या
किया किसने धोखे से
मार्यादा को फाँसी दे
दफ़न किया जिस धारा में
धर्म भाग पाताल गया
न लौट आयेगा कभी
घात किया मानव ने
सबके साथ, मुकरेवादे से
नहीं बचा पश्चाताप करना
आज भूमि के मानव को
चोरी घुसपैठी अन्याय ढेर सारे हैं
साथी बदलते संस्कृति की
पर परम्परा अकेली है
साथ देगा कौन बेचारी का
सब परिवर्तन के साथी है
कराह रही अपनी पीड़ा से
तड़प कर मर जाना है
मैं अकेला क्या करूँ
न मेरे पास कोई खज़ाना है

(कनिष्ठ लिपिक)

डीजल लॉवी, मऊ (यांत्रिक ओ. एण्ड एफ.)

पूर्वोत्तर रेलवे / वाराणसी मण्डल

हम लाख आधुनिकता में ढल जायें व पाश्चात्य संस्कृतियों को कितना भी प्रश्रय दे दें, पर हमारी सभ्यता की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह हमारे संस्कारों को किसी ना किसी रूप में जीवत रखे हुए हैं। वह आज भी हमारे समाज में रिश्ते नातों की डोर को बिना गांठ पड़े अपने अटूट शक्तियों द्वारा इतनी मजबूती से बांधे रखते हैं जो उन्हें सदा स्फूर्त रखते हैं और गर्माहट देते रहते हैं। यह कहानी प्रेम, बलिदान व जीवन संघर्ष की अदभूत दास्तान है, जिसका प्रत्येक चरित्र अपने कर्तव्य निर्वाह के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है।

मेरे पिता सूरजभान एक जिंदादिल, कर्मठ व निष्ठावान व्यक्ति थे। उनके मुख से मैंने आज तक किसी के लिए 'ना' शब्द नहीं सुना था। दोपहर की चिलचिलाती धूप हो या दिसंबर की बर्फीली सर्दी, यदि कोई मदद मांग देता तो उनके कदम उस ओर फौरन ही बढ़ जाते। सभी की समस्याओं का निदान होता था। उनके पास उनका उत्साह व तर्कशक्ति देखकर बड़े-बड़े भी घुटने टेक देते थे। संयुक्त परिवार के वटवृक्ष तले पले-बढ़े पिताजी को बड़े-बुजुर्गों का आदर्श की छत्रछाया में संस्कारों की ऐसी बेड़ियां डाल दी गई थीं जो शायद उनके विरुद्ध कभी सही गलत का बोध होने नहीं दिया। जिस घर में पिता नहीं हो तो उस घर में बड़ा भाई पिता समान होता है, यही सिखाया गया था उन्हें शुरू से। अतः अनुज धर्म का पालन करते हुए वह सदा अपने बड़े भाई और भाभी के प्रति अंधानुभक्ति में लीन रहे। जो भी वे कह देते उसे ही लकीर मानकर अपने परिवार के प्रति समर्पित कर देते। यही कारण था कि मां भी उनकी बात काटने या विरुद्ध जाने का साहस नहीं जुटा पाती थीं। अतः उन्होंने भी घर की सुख-शांति के लिए सब कुछ नियति पर छोड़ दिया था।

कालचक्र भी अपना खेल नियत समय पर ही खेलता है। अमावस की काली रात की छाया भी इस परिवार पर पड़ चुकी थी। बड़े भाई और भाभी के मन में भी लालच के जमे पांव ने उनकी बुद्धि पर ऐसा ताला जड़ा कि, छोटे भाई की सारी संपत्ति हड़प ले गए और बंटवारे में उसके जीवन यापन के लिए थोड़ी संपत्ति के अलावा कुछ हाथ नहीं लगा। हम पर तो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा, मेरे पिता के पैरों तले की जमीन खिसक गई थी। उन्हें बस अंधकार के सिवा कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। अपने सगों से धोखा मिलने पर वह इस कदर टूट चुके थे, मानों अब उनके अंदर कोई इच्छा ही नहीं बची थी। इस घुटन भरे माहौल में परत दर परत पिछली बातें याद कर उन्हें दीमक की भांति चाट रहे थे। अपने बड़े भाई पर उसने इस कदर भरोसा रखा कि उसने जो भी कमाया लाकर आंख मूंद कर उन्हें सौंप दिया। अपने लिए उसने आज तक कुछ सोचा ही नहीं सिर्फ हमारा का मन में भाव लिए सब कुछ न्योछावर करता रहा।

आज उसके भरोसे का ही सिर्फ खून नहीं हुआ था, अपितु उसके सारे सपने भी उस माले की मोतियों की भांति टूट कर फर्श पर बिखर चुके थे। अब इस घर में अपनों के बीच पराया बनकर जीना असहनीय हो गया था। जिस खून पसीने से सींचा और जज्बातों की दीवारों से बना यह घरौंदा अब उसे चिढ़ाने लगा था। उसे चारों तरफ सिर्फ आग की लपटें और धुआं-धुआं दिखाई दे रहा था। और एक दिन उसने अपने को मजबूत किया कि जब दिल में ही दरार आ गया तो फिर किस लिए यहां रहना। इस निश्चय के साथ अपनी पत्नी व बेटे के साथ छोड़ दिया उसने अभागे रिश्ते को घर को गांव को। अब शहर ही उसका बसेरा था। उसने फिर से अपने आशियाने को एक नया रंग रूप देने में लग गया। समय ने फिर करवट

ली, घर में फिर बरकत ही बरकत होने लगी। शहर में नए रिश्ते नातों ने पनपना शुरू कर दिया था। पर एक बार अविश्वास व धोखा की डोर टूटने के बाद फिर वह खुद को संभाल नहीं पा रहा था। पुरानी बातों को याद कर उसका खून खौल उठता था। उसके अंदर का घाव अब नासूर का रूप ले था। इस कड़वी सच्चाई को भुलाने के लिए सहारा ढूंढने लगा था। किसी ने दिखा दिया था रास्ता उसे मयखाने का। पीने लगा था हर रोज शराब वह, या फिर कहिए शराब हीं पी रही थी उसे हर रोज ससुरी लत ही ऐसी है, एक बार लग गई तो जन्नत तक साथ नहीं छोड़ती है। नशेबाज कहता है कि अगर इस से दोस्ती हो गई तो फिर चाह कर भी यह साथ नहीं छोड़ती। जब अच्छे अच्छे दोस्त भी दगा दे जाते हैं तब भी यह साथ रहती है। हमेशा, बिल्कुल अपनों जैसा सारे गर्मों को हर लेती हैं। बिल्कुल निश्चित रह सकते हैं आप इस से दोस्ती करके। शायद इसी सूरदैत्य ने मेरे पिता को अपने नागपाश में ऐसे जकड़ लिया जिस से निकलना मुश्किल हो गया था। धीरे-धीरे वह अपने परिवार, धर्म व कर्तव्य से विमुख होते जा रहे थे। उनको न दिन का ठिकाना था, न रातों की फिक्र।

मां कितनी तल्लीनता से पिताजी के पसंद का खाना बनाती थी। गांव की वो चीजें भी, जो शहर में बामुश्किल मिलती हैं कहीं ना कहीं से मंगवा लेती थी जो पिताजी को प्रिय थीं। फिर वह ज़री वाली साड़ी पहनती, बालों को सलीके से गुंथती, माथे पर बिंदी, आंखों में काजल लगा कई कई दफा दर्पण के पास हो लेती थीं कि उनके सौंदर्य बोध में कोई कमी तो नहीं रह गई। दरवाजे पर नजर टिकाए इंतजार करते-करते उनकी आंखें पथरा जाती। कभी एक बजे तो कभी दो बजे रात को आना पिताजी की दिनचर्या बन चुकी थी। नशे में धुत झुमते-झामते घर

में घुसते, मां तरस जाती एक नजर भर उठा कर देख लेते उनके रूप को, बस इसी में उनको संतोष हो जाता, पर उन्हें तो इतना भी नसीब नहीं था।

'सुमन तुम अभी तक सोई नहीं, अरे बाबा, कितनी बार कहा है, मेरा इंतजार मत किया करो।' आप हाथ मुंह धो लीजिए मैं आपके लिए खाना परोसती हूं। 'नहीं बाबा, मुझे भूख नहीं' 'थोड़ा सा खा लीजिए, मैंने आपकी पसंद की साग बनाई है।' 'अच्छा इतनी जिद करती हो तो खा लेता हूँ लो बस खुश हो गई ना।' मां के लिए उनका इतना खा लेना ही मानों संतोष दे देता था। बस खाना खाते ही बिस्तर पर निढाल हो जाते थे। मां द्वारा किए श्रृंगार मानों उन्हें चिढ़ा रहे हों 'लो और करो श्रृंगार, तुम भी कितनी पगली हो ऐसे आदम जात के लिए यह सब करती हो जिसे तुम्हारी परवाह तक नहीं।' मां एक अतृप्ति सी ढो रही थी। सुबह होते ही जब पिताजी का नशा फटता तो मानों वे शर्मिंदा से मुंह छिपाना चाहते हो। 'सुमन, मैं तुम्हारा गुनाहगार हूं, तुम मुझे कितना सहती हो, मैं क्या करूं, छोड़ना तो चाहता हूं शराब, पर मजबूर हो जाता हूं। दिल पर ना जाने कैसा बोझ लिए ढो रहा हूं, नहीं रोक पाता खुद को।' बस सुमन चुपचाप उनकी बातों को सुनती पर शिकवा ना शिकायत पता नहीं किस मिट्टी की बनी है। शायद दूसरी स्त्री होती तो घर में रोज महाभारत होता, पर इतना होने के बावजूद हमारे घर में कौन सा मौन था, बिल्कुल शांति ही शांति। कहते हैं मां शुरू से ही ऐसी है।

अथाह समुद्र ही गहराई लिए हुए जो सारी पीड़ाओं को अपने में समाहित कर लेना चाहती हों। ना जाने उनमें विश्वास का कौन सा वटवृक्ष है जो उन्हें ज़रा भी डिगने नहीं देता था। धैर्य की तो मानों प्रतिमूर्ति थीं वो। उनका अटूट विश्वास था कि वे अपनी मर्जी से पीते हैं तो खुद ही एक दिन पीना छोड़ देंगे। अपने पिता पर

तरस आता है जो मां के पवित्र प्रेम व तपस्या को वे नहीं देख पा रहे थे। कहते हैं जिस घर में शराब का प्रवेश हो जाता है उस घर के बर्तन भी गिरवी रखे जाने लगते हैं। जिस पति से रती भर भी सुख नसीब ना हो वहां औरत नागिन सी फुफकारती है। उन पर ताने कसती है, उसे सही रास्ते पर लाने के लिए तरह-तरह से सबक सिखाती है। पर मां यहां न जाने किस स्त्री धर्म का निर्वाह कर रही थी यह पूछने की कभी हिम्मत नहीं हुई। और वह पुरुष भी कैसा जो गम को भुलाने के लिए बुजदिल की तरह ऐसी चीजों का सहारा ले रहा था। जिसे वह सहारा समझ रहा था वास्तव में वह विष था, जो उसे अंदर ही अंदर खोखला करता जा रहा था। आखिर शराब भी किसी की दवा बनी है आज तक। यह मीठी जहर मनुष्य को अपनी गिरफ्त में ले उसे एक जिंदा लाश बना कर छोड़ देती है। आखिर पिताजी के साथ भी ऐसा ही हुआ। सोये से अचानक जगे थे उस दिन जब उन्हें मृत्यु की छाया से सीधे साक्षात्कार हुआ था। अचानक ही गिर पड़े थे वे उनके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। कभी भी जीवन उनका साथ छोड़ सकती थी और मृत्यु अपने आगोश में लेने को मचल रही थी। मनुष्य की नियति ही है खुद ठेस लगती हैं तभी वह चेतता है।

जिस जीवन को उन्होंने पल-पल तरसाया अब वही उसके साथ खेल खेल रही थी। उनमें अब अपने जीवन के प्रति प्रेम का अंकुर फूट पड़ा था, अब उनमें जीने की एक लालसा का जन्म हो चुका था। अब वह जीना चाहते थे अपनी सुमन के लिए, अपने बेटे साकेत के लिए। जीवन भर प्यार व स्नेह के लिए तरसते रहे जिसे वह ना दे सके थे। पिताजी अपने को ग्लानी व अपराध बोध के महासागर में डूबते व उतराते हुए मां से एक याचक की भांति विनती कर रहे थे, “मुझे बचा लो सुमन मुझे बचा लो, मैं तुम लोगों

का अपराधी हूं। सुमन! मुझे तुमने कभी तुम्हारा जो रोका क्यों नहीं। मैं तुमसे पल-पल दूर जा रहा था और तुम चुपचाप खामोशी से सहती रही। मुझ पर हक था उसी खातिर कभी तो टोकती।” मां की डब डबाई आंखें पूरे आवेग से झर-झर झरने के समान फूट चली थी। उन्हें अपने धैर्य पर फक्र था। उनका विश्वास आज टूटने से बच गया था। सुमन को प्रतीत हो रहा था उसके जीवन में जो कैक्टस उग आए थे और दूर-दूर तक मरुस्थल ही नजर आ रहा था वह अचानक किसी नदी रुपी जल से भर गए हों। पति के न्योछावर करते प्यार को पाकर उसका आंचल लबालब छलक रहा था। पर जिंदगी जितनी करीब लग रही थी, वस्तुस्थिति वह उनसे दूर होती चली जा रही थी। डॉक्टर की कही एक-एक बात मेरे मनः मस्तिष्क पर वज्र की भांति पड़ रहे थे, “यदि इनके गुर्दे जल्द से जल्द नहीं बदले गए तो बस यह चंद दिनों के मेहमान हैं।”

अचानक ही प्रकाश से अंधकार में मन डोलने लगता। मैं मां की जीवन भर की तपस्या को यूँही व्यर्थ जाने नहीं देना चाहता था। कितने बरस के बाद तो देखे थे पिता की आंखों में मां के लिए प्यार और मां की सुखती आंखों में अचानक से उतर आए मोतियों से चमक को। जिस मां के पास पहले समय ही समय होता था, अब वह कैसे दिन से रात और फिर रात से दिन आंखों ही आंखों में काट देती थीं। पर वह अब एक पल भी जाया होने देना नहीं चाहती थी, मानों सारे सुखों को एक बार में ही उड़ेल देना चाहती थीं उन पर। एक पल के लिए भी उनकी आंखों से ओझल नहीं होती थीं। कैसी स्त्री हैं यह? कितना त्याग करेगी वह, अपनी तो सुध-बुध रहती नहीं, दिन-रात पति की सेवा सुश्रुषा में लगी रहती थीं। जब पिताजी की आंख लग जाती तो वह घोर निराशा से भर जाती मानों

काशी प्रतिबिंब

किसी अनजाने आशंका ने उन्हें घेर लिया हो। मां के चेहरे पर उतर आए शिकन मानों मुझसे चीख चीख कर कह रहे हो, “बेटा साकेता, बेटा अपने पिता को किसी तरह बचा लो।”

मेरे माता-पिता के बगैर कोई अस्तित्व नहीं था। मां के सुख के लिए मैंने जो तड़प देखी थी, उनके प्रति मेरा रोम-रोम गिरवी था। अब समय आ गया था कि मैं अपने पितृ ऋण को चुका कर मां के जीवन में उजाला ही उजाला बिखेर सकूँ।

मां से कुछ कहे बिना पिताजी के रूटीन चेकअप के लिए अस्पताल की ओर मेरे कदम चल दिए। पर मेरा दृढ़ निश्चय कुछ और ही निर्णय ले चुका था। अस्पताल के बॉन्ड पेपर पर मैं हस्ताक्षर कर रहा था, “मैं अपनी स्वेच्छा से अपने पिता को अंगदान किडनी के रूप में दे रहा हूँ, इस प्रक्रिया में यदि किसी प्रकार का खतरा या दुर्घटना होती है तो उसके लिए स्वयं उत्तरदाई होऊंगा, साकेता।” अस्पताल के मेल वार्ड में बेड नंबर 19, 20 पर हम पिता-पुत्र एक दूसरे को देख कर मुस्कुरा रहे थे। पिताजी की आंखों से कृतज्ञता के बड़े-बड़े बूंद बहकर तकिये को पूरी तरह गिला कर चुके थे। तभी मां बदहवास सी भागी भागी आती है। वह हम दोनों को बिस्तर पर लेटे-लेटे देखकर एक अनजान आशंका से सिहर उठती हैं, तभी डॉक्टर उन्हें सारी बातों से अवगत कराते हैं। मां बस मूक हो कभी मुझे देखती है तो कभी पिताजी को फिर उसके अंदर का सैलाब फट पड़ता है। वह दोनों बेडों के बीच घुटनों के बल बैठ जाती है और अपने दोनों हाथों को फैलाकर एक हाथ मेरे हाथ पर तथा दूसरा हाथ पिताजी के हाथों पर रखकर हमें ऐसे जोड़ देती है जैसे टूटे हुए सेतु पर बांध बन गया।

मुख्य नियंत्रक
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल

जीवन की परिभाषा

विकास केशरी

जीवन क्या है, ख्वाबो का एक घरोँदा है-2
किस्सा है संघर्षों का,
और उम्मीदों का फसाना है ॥

कुछ रो के गुजरी है जीवन,
कुछ हँस के यहाँ गुजारी है
कुछ सुलझी सी पहली है,
कुछ कशमकश की क्यारी है ॥

कुछ ख्वाब अधूरे छूट गये,
कुछ मजबूरी में लूट गये
चाहे कर भी पूरे कर न सकें,
कुछ ऐसे वादे टूट गये ॥

दुनिया के बाजारों में,
आपा धापी व्यापारों में
घोड़े हम रेस के बने हुए,
खुद ही खुद पर हैं तने हुए
स्वयं को धोखा देकर भी,
अपनी बातों पर अड़े हुए ॥

जीवन क्या है? एक रंगमंच,
यहाँ सबको खेल दिखाना है
उपरवाले के तानों पर,
मूरली धुन सबको बजाना है
कठपुतली हैं उसके हाथों की,
ये किस्सा बड़ा पूराना है ॥

संघर्षों और अत्याचारों से,
रोज ही लड़ते रहते हैं
द्वंद्व युद्ध और छद्म युद्ध में,
रोज ही जीते-मरते हैं ॥

अपने भी कभी पराये,
कभी रूठे कभी मनाये
संसारिक बन्धनों से मुक्त,
सोचों कहाँ हम जाए ॥

इस जीवन को ही जीना है,
जी-जी के फिर मर जाना है
मर-मर के फिर से जीना है,
इसी का नाम तो “जीवन” है ॥

वरिष्ठ लिपिक (वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबन्धक)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

किसी शायर ने क्या खूब कहा है कि :

“इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।”

निश्चित रूप से ये पंक्तियाँ भारतीय लोकतंत्र के तमाम संघर्षों को सहज उजागर कर देती है और उन तमाम आशंकाओं को निर्मूल साबित कर देती है जिनमें कहा गया था कि भारतीय लोकतंत्र बहुत ही जल्दी बिखर जाएगा। हम न सिर्फ एकजुट रहकर आगे बढ़े बल्कि अपनी विविधता को भी अपनी मज़बूती बना चुके हैं।

भारत ने 2021 के स्वतंत्रता दिवस को 75वाँ स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया। यह कार्यक्रम साल भर समारोहों के माध्यम से मनाया जाएगा। जैसा कि ज्ञात है 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से भारत मुक्त हुआ था, इसी उपलक्ष्य में हर साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर हर वर्ष, भारत के प्रधानमंत्री दिल्ली के लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्र को संबोधित करते हैं। भारत के अपनी स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश करते ही सरकार विभिन्न समारोहों की श्रृंखला आयोजित करेगी। इसके लिए 'आजादी का अमृत महोत्सव' 12 मार्च 2021 से शुरू किया गया है जो अगस्त, 2023 तक जारी रहेगा। 75वें स्वतंत्रता दिवस की थीम 'नेशन फर्स्ट, ऑलवेज फर्स्ट' होगी।

इस महोत्सव के अवसर पर प्रधानमंत्री ने 5 स्तंभों यानी स्वतंत्रता संग्राम, विचार, उपलब्धियाँ, गतिविधियाँ और संकल्प पर जोर देने की बात कही है।

उन्होंने इस महोत्सव की शुरुआत साबरमती आश्रम अहमदाबाद से पदयात्रा को हरी झंडी देकर की। भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई 1857 के सिपाही विद्रोह से शुरू हुई और प्रथम विश्व युद्ध के बाद इसे

गति मिली। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू किया। आखिरकार अनगिनत शहादतों, बलिदानों के बाद स्वतंत्रता का दिन आ ही गया। देखते ही देखते भारत 75वाँ स्वतंत्रता दिवस धूम-धाम से मना रहा है।

केंद्र सरकार ने 12 मार्च 2021 को 'आजादी के अमृत महोत्सव' की शुरुआत की थी। साबरमती आश्रम से नवसारी में दांडी तक 388 किलोमीटर की यात्रा शामिल है। 'अमृत महोत्सव' के 75 सप्ताह में 75 वंदे भारत ट्रेनों द्वारा देश के कोने-कोने को जोड़ने की बात कही गयी।

आज़ादी से अब तक के समय के बीच बहुत कुछ बदला। इतिहास कई छोटी-बड़ी घटनाओं का साक्षी रहा। एक ऐसा दौर भी विश्व के इतिहास में एक ऐसी महामारी भी आयी जो पिछले 100 वर्षों में अपना इतना बुरा प्रभाव वैश्विक स्तर पर नहीं छोड़ पायी थी। चीन से आए कोरोना वायरस के सामने पूरा विश्व असहाय हो गया। सभी देशों की अर्थव्यवस्था पटरी से उतर गई, जिसमें भारत भी शामिल रहा। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अन्य अनेकों योजनाओं के साथ - साथ 'आत्मनिर्भर भारत' योजना की भी शुरुआत की।

कोरोना वायरस महामारी के कारण देशों के बीच वस्तुओं की आवाजाही भी ठीक से बहाल नहीं हो सकी है। तकरीबन सभी देश घरेलू आर्थिक मोर्चे पर बेरोजगारी, मांग में कमी, ग्रोथ रेट नीचे जाने, दवाइयाँ पी.पी.ई. किट जैसी जरूरी वस्तुओं की कमी जैसे संकट का सामना कर रहे हैं। बदलाव के इस रूख को भाँपते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के लिए नए विजन के रूप में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की घोषणा की। उन्होंने 'आपदा को अवसर' में बदलने

काशी प्रतिबिंब

की बात कही।

21वीं सदी के भारत के सपने को स्वीकार करने के लिए भारत को आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है। लोकल सिर्फ जरूरत नहीं, हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने 'Vocal for local' का नारा दिया तथा लोगों को लोकल प्रोडक्ट खरीदने और उनका प्रचार करने का आह्वान किया। आत्मनिर्भर भारत के लिए ₹20 लाख करोड़ से अधिक का आर्थिक पैकेज दिया गया जो देश की जीडीपी (Gross domestic product) के लगभग 10% के बराबर है।

इस पैकेज में 4L पर फोकस किया गया है- Land, Labour, Liquidity and Laws.

आत्मनिर्भरता (Self-Reliance), आत्म केंद्रित (Self-Centred) से अलग है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं होगा।

भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संकल्पना में अटूट विश्वास रखता है। अतः हमारे लिए आत्मनिर्भर का मतलब, दुनिया से जुड़े रहते हुए आर्थिक विकास के साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करना है।

उद्देश्य, सिर्फ कोविड-19 महामारी के दुष्प्रभावों से लड़ना ही नहीं है, बल्कि भविष्य के भारत का पुनर्निर्माण करना है। यह विचार महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की अवधारणा से सुमेलित है। महात्मा गांधी का मानना था कि 'हर एक गाँव अपनी जरूरतों को पूरा करने के मामले में स्वावलंबी हो तभी वह सच्चा ग्राम स्वराज्य स्थापित हो सकता है।' आत्मनिर्भर भारत की रणनीति-

आत्मनिर्भर भारत मिशन दो चरणों में लागू किया जाएगा-

प्रथम चरण- इसमें चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया

जाएगा ताकि स्थानीय विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके।

द्वितीय चरण- इस चरण में रत्न एवं आभूषण, फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

सरकार ने लैंड, लेबर, लिक्विडिटी और लॉ पर फोकस किया है। लैंड यानी जमीन के बिना किसी उद्योग की स्थापना नहीं की जा सकती है। ऐसे में उद्योगों की स्थापना के लिए जमीन से जुड़े विवादों को खत्म किया जाएगा।

“आत्म-निर्भरता ईमानदारी के पथ पर चले बिना संभव नहीं है।”

ऐसे ही लेबर यानी श्रम के बिना भी उद्योग या उत्पादन की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन भारत में लेबर लॉ को लेकर कई जटिलताएँ हैं। इसके लिए तार्किक कानून बनाए जाने की जरूरत है। फिर आर्थिक गतिविधियों का पहिया चलाने के लिए लिक्विडिटी यानी नगदी का होना भी बेहद जरूरी है। फोकस का चौथा क्षेत्र लॉ है। देश में कई ऐसे जटिल कानून हैं जिससे विकास में रुकावटें खड़ी होती हैं। इसीलिए आत्मनिर्भरता का रास्ता साफ करने के लिए कानून में बड़े बदलाव किए जाएंगे।

“एकजुट होकर फिर, एक नया स्वप्न सजाना है। स्वतंत्र कराया जिस भारत को उसे आत्मनिर्भर बनाना है।”

आत्म निर्भर भारत के लिए पाँच स्तम्भों को आधार बनाया गया है - अर्थव्यवस्था (Economy)- जो (Incremental) वृद्धिशील परिवर्तन के स्थान पर बड़ी उछाल (Quantum change Jump) पर आधारित हो।

अवसंरचना (Infrastructure) ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत की पहचान बने।

प्रौद्योगिकी (Technology) 21वीं सदी

काशी प्रतिबिंब

प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित।

गतिशील जनसांख्यिकी (Vibrant Demography) जो आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्रोत है।

मांग (Demand) भारत की मांग और आपूर्ति श्रृंखला की पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार ने प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के लिए कई बड़े आर्थिक सुधारों का ऐलान किया है। अब बात करते हैं आत्मनिर्भर भारत के लिए किए गए आर्थिक सुधारों के घोषणा की -

सरकार ने MSME's तथा अन्य क्षेत्रों के लिए विभिन्न क्रेडिट गारंटी योजनाओं की घोषणा की है। सरकार द्वारा MSME की परिभाषा में बदलाव किया गया है। आर्थिक पैकेज में कोयला खनिज, रक्षा उत्पादन, नागरिक उड्डयन, केंद्र शासित प्रदेशों में बिजली वितरण कंपनियों, अंतरिक्ष क्षेत्र और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र के संरचनात्मक सुधारों पर फोकस किया गया है। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए 'मेक इन इंडिया' पहल पर जोर दिया जाएगा।

निजी क्षेत्र की क्षमता में सुधार करने के लिए निजी क्षेत्र को इसरो की सुविधाओं और अन्य प्रासंगिक संपत्तियों का इस्तेमाल करने की अनुमति दी जाएगी। इसरो की भविष्य की योजनाएँ जैसे ग्रहों की खोज, बाहरी अंतरिक्ष यात्रा आदि में निजी क्षेत्र की सहभागिता की इजाजत होगी।

किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिल सके इसके लिए सरकार आवश्यक वस्तु अधिनियम में बदलाव करेगी। आवश्यक वस्तु अधिनियम में संशोधन के बाद प्रसंस्करण करने वालों और मूल्य श्रृंखला के अन्य भागीदारों पर भंडारण सीमा लागू नहीं होगी। राष्ट्रीय आपदा और भुखमरी जैसी

स्थितियों में ही भंडारण सीमा रहेगी।

सत्यनिष्ठा का तात्पर्य यह है कि नैतिक कर्ता अपनी अंतः मान्यताओं के अनुसार कार्य करता है। उसका काम पाखंड या धोखे से मुक्त होता है और साथ ही, उसके द्वारा निर्धारित मूल्यों के अनुरूप होता है।

वहीं ईमानदारी नैतिक चरित्र के एक पहलू को संदर्भित करती है और सकारात्मक एवं पवित्र गुणों जैसे - सत्यनिष्ठा, सच्चाई, सरलता, वफादारी आदि मूल्यों से जुड़ी है। आत्मनिर्भर भारत के लिए केवल आर्थिक के बूत आगे बढ़ना संभव नहीं हो सकेगा। बल्कि सरकार को देश में समग्र सुधार को बढ़ावा देना होगा जैसे - श्रम सुधार, सिविल सेवा सुधार, कौशल सुधार, शिक्षा सुधार आदि। इसमें सिविल सेवा सुधार बेहद जरूरी है। सत्यनिष्ठा और ईमानदारी, विशेषकर एक लोक सेवक के लिए सर्वोच्च महत्व के हैं। एक लोक सेवक का कार्य क्षेत्र लोगों के लिए कार्य करने से जुड़ा है और उसकी क्रियाएँ, अनेक फैसलों, दिन - प्रतिदिन का प्रशासन और लोगों के विकास में वृद्धि करने से संबंधित हैं, जिनकी सफलता लोक सेवक की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी से जुड़ी है।

यदि लोक सेवक में इन मूल्यों का अभाव है तो गरीब, अशिक्षित, सीमांत और कभी-कभी सम्प्रांत वर्ग भी इससे प्रभावित होता है। उदाहरण स्वरूप, सड़क निर्माण में भ्रष्टाचार, कम गुणवत्ता की सड़क के निर्माण का कारक बन सकता है। ऐसी स्थिति में एक लोक सेवक को सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के प्रति हमेशा जागरूक रहना चाहिए। लोक सेवक में इन मूल्यों का होना, भ्रष्टाचार जैसी समस्या के समाधान में सहायक होगा, जिससे आत्मनिर्भर भारत अभियान की प्राप्ति संभव हो सकेगी। अतः इन मूल्यों को बढ़ाए जाने के उपाय करने चाहिए क्योंकि

काशी प्रतिबिंब

आत्मनिर्भर भारत का विकास सत्यनिष्ठा के पथ पर चले बिना संभव नहीं है। सरकार द्वारा भी इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। 'नयी उड़ान' और 'मिशन कर्मयोगी' जैसी पहलों के जरिये भी सिविल सेवाओं में सुधार के प्रयास जारी हैं।

अतः भ्रष्टाचार की लड़ाई प्रत्येक जन-गण का नैतिक दायित्व है। इसमें सर्वाधिक जिम्मेदारी युवाओं की है। इतिहास गवाह है कि जब-जब युवाओं ने कमर कसी है बुराई पराजित हुई है, चाहे वह आज़ादी की लड़ाई हो या आपातकाल के दौरान का संघर्ष, युवाओं ने विजय पताका फहराई ही है। बस युवाओं को यह समझना होगा कि सत्ता और धन से न तो उदारता आती है और न ही शालीनता। उसके लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञान ही युवाओं को शिष्ट और भ्रष्ट का अंतर समझाता है तथा भ्रष्टाचार से लड़ने की हिम्मत और ताकत प्रदान करता है। इसलिए ज्ञानबद्ध युवाओं की टोली द्वारा भ्रष्टाचार की हार सुनिश्चित है।

अंततः दुष्यंत कुमार की इन पंक्तियों के साथ यही कहना समीचीन है कि भले भ्रष्टाचार पीड़ा का पहाड़ बन गया हो परन्तु यह न सर्वकालिक है और न स्थायी "सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए" सत्यनिष्ठा व ईमानदारी आत्मनिर्भर भारत अभियान को सफल बना सकती है। हमें इसके लिए दृढ़ निश्चय करके प्रयास करने चाहिए।

**वरिष्ठ अनुवादक
म.रे.प्र. (राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी**

शायद....

नीरू अवस्थी

वो जो सामने के,
बरामदे से दिखता
एक "बादाम" का पेड़,
तुम्हारे ऊँचे - लम्बे
कद की याद दिलाता,
ऐसा लगता कि,
बाँहें-पसारे खड़ा हो
शायद....
आते कुछ "परिन्दे" जरूर
यहाँ-वहाँ से,
पंख फैलाए -
बादल-बारिश-बूंदों
के किस्से,
एक-दूसरे को सुनाते
ऐसा लगता कि,
बहलाते-फुसलाते-बरगलाते,
एक दूसरे को,
शायद....
आज देखा वो,
झूमता हुआ
मदमस्त,
बेखौफ़,
बादाम का पेड़,
औंधे मुंह जमीन पर पड़ा था,
शायद....
"हवा" के साथ,
ऊपर बहुत ऊपर,
और ऊपर....
जाने की होड़ लगाई थी उसने.....

**कार्यालय अधीक्षक
म.रे.प्र. (कार्मिक)
वाराणसी**

एफ. आई. आर. एक अंग्रेजी शब्द है इसका फुल फार्म फर्स्ट इनफार्मेशन रिपोर्ट होता है तथा हिन्दी में इसे प्रथम सूचना रिपोर्ट कहा जाता है। किसी आपराधिक घटना के संबंध में संज्ञेय अपराध में पुलिस के पास कार्यवाही के लिए दर्ज की गयी सूचना को प्राथमिकी, एफ.आई.आर. प्रथम सूचना रिपोर्ट या इन्फार्मेशन रिपोर्ट कहा जाता है।

प्रथम सूचना रिपोर्ट एक लिखित दस्तावेज है। पुलिस द्वारा किसी संज्ञेय अपराधकारित होने पर जब सूचना प्राप्त होने पर प्रथम सूचना रिपोर्ट प्रपत्र पुलिस ही द्वारा तैयार किया जाता है। प्रथम सूचना रिपोर्ट दण्ड प्रक्रिया संहिता के अध्याय-12 धारा-154 में दिया गया है, प्रथम सूचना रिपोर्ट संज्ञेय अपराध की सूचना होती है यह एक मौलिक साक्ष्य नहीं होती है, क्योंकि पुलिस बल सदस्य को इस सूचना के बाद भी अपराधों का अन्वेषण करना आवश्यक होता है, धारा-154 के अधीन अभिलिखित किये गये कथन को सामान्य व्यवहार के अन्तर्गत एफ.आई.आर. रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है।

धारा-154 (1) : के अनुसार संज्ञेय मामले में इत्तिला किये जाने से संबंधित प्रत्येक इत्तिला, यदि पुलिस थाने के भार साधक अधिकारी को मौखिक दी गयी है तो उसके द्वारा या उसके निदेशाधीन लेखबद्ध कर ली जायेगी और इत्तिला देने वाले को पढ़ कर सुनाया जायेगा, ऐसी इत्तिला पर चाहे वह लिखित रूप से दी गयी हो अथवा मौखिक रूप में रखी जायेगी जिसे राज्य सरकार द्वारा निमित्त विहित करे, प्रविष्टि किया जायेगा। परन्तु यदि इत्तिला ऐसी स्त्री द्वारा की जाती

है, जिसके विरुद्ध भारतीय दण्ड संहिता-1860 का 45 की धारा 326 क, धारा 326 ख, धारा 354, धारा 354 क, धारा 354 ख, धारा 354 ग, धारा 354 घ, धारा 376, धारा 376 क, धारा 376 क, धारा 376 ख, धारा 376 ग, धारा 376 घ, धारा 376 घक, धारा 376 घख, धारा 376ङ या धारा 509 के अधीन अपराध कारित किया गया या कारित करने का प्रयत्न किया गया अभिकथित किया जाता है, ऐसी इत्तिला महिला पुलिस अधिकारी या किसी महिला अधिकारी द्वारा अभिलिखित की जायेगी।

धारा 154 (II) के अनुसार उपधारा-एक के अधीन अभिलिखित इत्तिला की प्रतिलिपि इत्तिला देने वाले को तत्काल निशुल्क दी जायेगी।

धारा 154 (III) के अनुसार कोई व्यक्ति जो किसी पुलिस थाने के भार साधक अधिकारी उपधारा एक में निर्दिष्ट इत्तिला को अभिलिखित करने से इन्कार करने से व्यथित है, ऐसी इत्तिला का सार डाक द्वारा लिखित रूप से संबंधित पुलिस अधीक्षक को भेजा जा सकता है, यदि समाधान हो जाता है कि ऐसी इत्तिला से किसी संज्ञेय अपराध का किया जाना प्रकट होता है तो, या तो स्वयं मामले का अन्वेषण करेगा या अपने किसी अधिनस्थ पुलिस अधिकारी द्वारा जैसा कि संहिता रीति से अन्वेषण किये जाने का निदेश देगा और उस अधिकारी को उस अपराध के संबंध में पुलिस थाने के भार साधक अधिकारी की सभी शक्तियां होगी।

एफ.आई.आर. के आवश्यक तत्व

1. यह कि संज्ञेय अपराध/हस्तक्षेप अपराध के

काशी प्रतिबिंब

गठित होने की सूचना होती है।

2. प्रथम सूचना रिपोर्ट उस पुलिस स्टेशन में दर्ज की जाती है जिसके क्षेत्राधिकार में अपराध किया गया हो। ऐसा क्षेत्राधिकार सीआरपीसी की धारा-177 से 184 तक तथा धारा 462 के द्वारा निर्धारित किया जाता है।

3. सूचना मौखिक या लिखित या आनलाईन के माध्यम से दी जा सकती है।

4. यदि सूचना मौखिक है तो पुलिस अधिकारी द्वारा या उसके अधिनस्थ द्वारा लिखी जायेगी एवं सूचना देने वाले को पढ़कर सुनाई जायेगी।

5. सूचना देने वाले व्यक्ति का हस्ताक्षर या अंगूठा एफ.आई.आर. पर किया जाना आवश्यक होता है

6. एफ.आई.आर. तीन प्रतियों में दर्ज कर एक प्रति सूचना देने वाले को निःशुल्क दी जाती है।

7. सूचना का सार राज्य सरकार द्वारा विहित किसी पुस्तक में लिखा जायेगा यह सूचना थाने में रखी जनरल डायरी में लिखी जाती है।

8. एफ. आई. आर. में यह आवश्यक नहीं है कि उसमें गवाहों एवं अपराधियों का नाम हो।

9. एफ. आई. आर. में तथ्यहीन बात नहीं होना चाहिए, सूचना ठोस एवं विश्वसनीय होनी चाहिए, जिसके आधार पर कोई हस्ताक्षेप्य अपराध बनाया जा सके।

10. यदि पुलिस थाने का भार साधक अधिकारी प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखने से इन्कार करता है तो व्यथित व्यक्ति सूचना का सार लिखित रूप में डाक द्वारा संबद्ध पुलिस अधीक्षक को भेज सकता है।

एफ.आई.आर. के अन्य तत्व-

1. एफ.आई.आर पुलिस फार्म नम्बर-341 पर

हस्ताक्षेप अपराध के संबंध में लिखा जाता है तथा फार्म नम्बर-347 पर अहस्ताक्षेप अपराध के संबंध में लिखी जाती है।

2. एफ. आई. आर. लिखने वाले व्यक्ति यदि हस्ताक्षर एवं अंगूठा नहीं लगाता है, तो धारा 180 आई.पी.सी. का अपराध करता है।

3. यदि थाने के अधिकारी/कर्मचारी एफ.आई.आर. लिखने से मना करते हैं तो धारा 166 आई. पी. सी. में दण्डनीय है।

4. साक्ष्य अधिनियम की धारा 35 के अन्तर्गत एफ.आई.आर. मान्य होता है।

5. यदि पुलिस थाने के भार साधक अधिकारी एफ.आई.आर. की कापी देने से इन्कार करता है तो वह पुलिस अधिनियम की धारा 29 का उल्लंघन करता है।

6. प्रथम सूचना रिपोर्ट की कापी अपराधी व्यक्ति को मजिस्ट्रेट महोदय के आदेश से ही मिल सकती है जब तक की चार्ज शीट तैयार न की गयी हो।

(एम० ए०, एल० एल० बी०)
सउनि / अभियोजन मुख्यालय
गोरखपुर

हिंदी हमारी राष्ट्र की अभिव्यक्ति
का सरलतम स्रोत है।

- सुमित्रानंदन पंत

राजभाषा विभाग की गतिविधियाँ



दिनांक 30.01.2023 को
वाराणसी सिटी स्टेशन पर
साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी
की जयंती समारोह
का आयोजन किया गया।

दिनांक 21.02.2023 को मंडल रेल
प्रबंधक कार्यालय के भारतेंदु
सभागार कक्ष में साहित्यकार
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी
की जयंती समारोह का
आयोजन किया गया।



दिनांक 22.03.2023 को भारतेंदु सभागार कक्ष में
मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के
अवसर पर मंडल के मुख्य नियंत्रक
श्री संजय कुमार गुप्ता द्वारा रचित पुस्तक
'संवेदनाएं फिर जी उठेंगी' का विमोचन करते हुए
मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय,
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परि.) श्री ज्ञानेश त्रिपाठी,
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव,
मुख्य परियोजना प्रबंधक (गति शक्ति)
श्री कौशलेश सिंह तथा अन्य अधिकारी गण।



दिनांक 09.04.2023 को मऊ स्टेशन
पर स्थित आचार्य राहुल सांकृत्यायन
हिंदी पुस्तकालय में यात्रा साहित्य
के पितामह राहुल सांकृत्यायन जी
की जयंती मनाई गई।



वाराणसी मंडल की गतिविधियाँ



दिनांक 12.01.2023 को अंतर विभागीय 20-20 क्रिकेट प्रतियोगिता की विजेता रेलवे सुरक्षा बल की टीम को विजेता ट्रॉफी प्रदान करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय।



74वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे मिनी स्टेडियम, लहरतारा में आयोजित समारोह में संबोधित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय।



दिनांक 20.05.2023 को बनारस स्टेशन परिसर में स्थापित 'रेस्ट्रेंट ऑन व्हील' के उद्घाटन के अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय एवं माननीय विधायक कैंट श्री सौरभ श्रीवास्तव।



दिनांक 31.05.2023 को बरेका में आयोजित 'अंतर मंडलीय हैंडबॉल प्रतियोगिता-2023' में वाराणसी मंडल की रे.सु.ब. की महिला टीम ने फाइनल मैच लखनऊ मंडल को हराया। विजेता ट्रॉफी के साथ रे.सु.ब. की महिला टीम एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय।



दिनांक 12.04.2023 को गोरखपुर-छपरा रेल खण्ड के विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान कप्तानगंज स्टेशन का निरीक्षण करते हुए महाप्रबंधक श्री चन्द्र वीर रमण, मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव तथा अन्य अधिकारीगण।

वाराणसी मंडल की गतिविधियाँ



दिनांक 07.03.2023 को बनारस स्टेशन का निरीक्षण करते हुए प्रमुख कार्यकारी निदेशक (गति शक्ति), रेलवे बोर्ड श्री अनिल कुमार खंडेलवाल एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव तथा अन्य अधिकारीगण।



दिनांक 12.03.2023 को अमृत भारत मिशन के अंतर्गत चयनित गाजीपुर सिटी स्टेशन का निरीक्षण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गति शक्ति) श्री कौशलेश सिंह तथा अन्य अधिकारीगण।



दिनांक 13.03.2023 को अमृत भारत मिशन के अंतर्गत चयनित छपरा एवं सीवान जंक्शन का निरीक्षण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव तथा अन्य अधिकारीगण।



दिनांक 14.03.2023 को अमृत भारत मिशन के अंतर्गत चयनित देवरिया सदर स्टेशन का निरीक्षण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री राहुल श्रीवास्तव तथा अन्य अधिकारीगण।



दिनांक 21.03.2023 को रेलवे अधिकारी क्लब में सम्पन्न 'ऑन स्पॉट ड्राइंग पेंटिंग एवं निबन्ध प्रतियोगिता' के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय एवं मंडल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती सुजाता पाण्डेय।



राजभाषा विभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी द्वारा प्रकाशित